सुखसागर

सेवा : रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर, जालन्धर

जगतगुरू रविदास महाराज जी
हरि
सतिगुरू सरवण दास महाराज जी
श्री गुरू रविदास जन्म स्थान मंदिर सीर गोवरधनपुर, वाराणसी (यू.पी.)

सुखसागर

निशान साहिब
रविदासीया धर्म

Year : 2000
Copies : 2000

Year : 2023
Copies : 5000

सेवा :

रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर, जालन्धर

रविदासीया धर्म के नियम

(1) हमारा रहबर : सतिगुरु रविदास महाराज जी

(2) हमारा धर्म : रविदासीया

(3) हमारी धार्मिक पुस्तक : अमृतवाणी सतिगुरु रविदास महाराज जी

(4) हमारा कौमी निशान साहिब :

(5) हमारा सम्बोधन : जय गुरुदेव

(6) हमारा महान् तीर्थस्थान : श्री गुरु रविदास जन्म अस्थान मन्दिर सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू. पी.)

(7) हमारा उद्देश्य : सतगुरु रविदास जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार। इसके साथ-साथ महाऋषि भगवान वालमीक जी, सतगुरु नामदेव जी, सतगुरु कबीर जी, सतगुरु त्रिलोचन जी, सतगुरु सैन जी तथा सतगुरु सधना जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार करना। सभी धर्मों का सम्मान करना, मानवता के साथ प्रेम करना तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करना

निशान साहिब
रविदासीया धर्म

सतिगुरु रविदास महाराज जी के जीवन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य

★ **प्रकाश दिवस :**

माघ सुदी पंद्रास **1433** विक्रमी सम्वत् सन् **1377** ई०

★ **जन्म स्थान :**

ग्राम: सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू० पी०)

★ **माता-पिता जी का नाम :**

पिता जी- पूजनीय संतोख दास जी,

माता जी- पूजनीय कलसी देवी जी

★ **दादा-दादी जी का नाम :**

दादा जी- पूजनीय कालू राम जी,

दादी जी- पूजनीय लखपती जी।

★ **सुपत्नी एवं सपुत्र का नाम :**

सुपत्नी पूजनीय लोना देवी जी,

सपुत्र पूजनीय विजय दास जी।

★ **ब्रह्मलीन :**

आषाढ़ की संक्रांति **1584** विक्रमी सम्वत्

(**1528** ई०) वाराणसी में।

विषय-सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ
	अमृत समय की अमृतवाणी	
	सिरी रागु	
1.	तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥	1
	रागु गउड़ी	
2.	बेगमपुरा सहर को नाउ ॥	1
3.	ऐसी भगति न होयि रे भाई ।।	2
4.	है सब आतम सुख परकास साँचो ।	3
5	कोउ सुमरन देखौं ये सब उपली चोभा ॥	3
	गउड़ी पूरबी	
6.	कूपु भरिओ जैसे दादिरा	3
	राग आसा	
7.	म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर	4
8.	संत तुझी तनु संगति प्रान	5
9.	हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥	5
	राग गूजरी	
10.	दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥	5

राग सोरठि

11. जउ हम बांधे मोह फास 6
12. सुखसागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जाके ॥ 6
13. जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ 7

राग बिलावलु

14. दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ।। 8
15. जिह कुल साधु बैसनो होइ ॥ 8
16. जो मोहि बेदनि कासनि आखूँ 9
17. ऐसा ही हरि क्यूं पइवो 9
18. हम घर आयहु राम भतार 10

राग भैरउ

19. ऐसा ध्यान धरौं बनवारी । 10
20. अबिगति नाथ निरंजन देवा । 11
21. गुरु सभु रहसि अगमहि जानैं । 12

राग आसावरी

22. केसवे विकट माया तोर ताते 12
23. तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु । 13
24. देहु कलाली एक पियाला । 13
25. ऐसी मेरी जाति विखियात चमारं ॥ 13

26. सतगुर हमहु लखाई बाट। 14
27. जो तुम तोरो राम मै नहिं तोरौं। 15
28. अब कैसे छूटै नाम रट लागी॥ 15
29. माधौ! मोहि एकु सहारौ तोरा।। 15

राग टोडी

30. पावन जस माधो तोरा। 16
31. पैंतीस अक्षरी 17
32. पदे 22

संध्य समय की अमृतवाणी

राग धनासरी

33. हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु ... 40
34. चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी .. 40
35. मेरी प्रीति गोपाल सों जन घटै हो। 41
36. दरशन दीजै राम दरशन दीजै। 41

राग जैतसरी

37. नाथ कछूअ न जानउ॥ 41

राग सूही

38. सह की सार सुहागनि जानै॥ तजि अभिमानु सुख... 42

रागु गोंड

39. मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ 43
40. जे ओहु अठिसठि तीरथ न्हावै ॥ 43
41. आज दिवस लेऊँ बलिहारा ॥ 44

राग रामकली

42. पड़ीऐ गुनीऐ नाम सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ॥ 44
43. गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ। 45
44. ऐसो कुछु अनुभौ कहत न आवै ॥ 46
45. नरहरि चंचल है मति मोरी कैसे भगति करूँ मैं तोरी ॥ 46
46. तब राम नाम कहि गावैगा ॥ 47

रागु मारु

47. ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ 47
48. पीआ राम रसु पीआ रे ॥ 47

राग केदारा

49. खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥ 48

राग मलार

50. नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥ 49

राग सारंग

51. चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ ॥ 49

राग कानडा (दोपाद)

52. जा कै राम जी धनी ता कै काहि की कमी है। 50
53. बारह मास 51

विवाह की विधी

54. दोहरा 60
55. सांद बाणी 61
56. अनमोल वचन''(मिलनी के समय) 61

''शादी उपदेश''

57. ''पहिलड़ी लांव'' 62
58. ''दूजड़ी लांव'' 63
59. ''तीजड़ी लांव'' 63
60. ''चौथड़ी लांव'' 64
61. ''सुहाग उसतत'' 64

॥ मंगलाचार ॥

62. ''मंगलाचार पहिला'' 65
63. ''मंगलाचार दूसरा'' 66
64. ''मंगलाचार तीसरा'' 66
65. ''मंगलाचार चौथा'' 67
66. ''अनमोल वचन'' 68

वैरागमई अमृतवाणी

राग गउड़ी

67. पहिले पहरे रैणि दे बणिजारिया तैं जनम लिया .. 68

गउड़ी बैरागणि

68. घट अवघट डूगर घणा इक निरगुणु बैलु हमार ॥ 70

राग आसा

69. माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥ 71

राग सोरठि

70. जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ॥ 71

71. रे मन! चेत मीचु दिन आया, तो जग जाल न .. 72

राग सूही

72. जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥ करना कूचु रहनु ... 72

राग सूही चौपदा

73. ऊंचे मंदर साल रसोई 73

74. दुखियारी दुखियारा जग महिं, मन जप लै राम ... 73

राग मारू (चौपदे)

75. मन मोरा माया महि लपटानो ।। 74

76. बीति आयु भजनु नहीं कीन्हा ॥ 74

राग बिलावलु

77. का तूँ सोवै जागि दिवाना। 74

78. खोजत कित्थूं फिरै तेरे घट महि सिरजनहार॥ 75

राग बसंतु

79. तुझहि सुझंता कछू नाहि॥ 76

राग मलार

80. मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते॥ 76

राग आसावरी

81. रे मन मांछला संसार समुंदे, तूँ चित्र बिचित्र बिचार रे 77

आरती

82. नामु तेरो आरती मजनु मुरारे॥ 78

83. आरती कहाँ लैं कर जोवै। 78

84. संत उतारै आरती देव सिरोमनीये॥ 79

85. गगन मंडल में आरती कीजै, नाद बिंद इके ... 79

86. आरती करत हरषै मन मेरो, आवत चित तुव .. 80

87. अरदास 81

* * *

अमृत समय की अमृतवाणी

सतनाम सतनाम सतनाम

सिरी रागु

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥ 1 ॥ जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥ पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥1 ॥ रहाउ ॥ तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥ प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥ 2 ॥ सरीरु आराधै मोकउ बीचारु देहू ॥ रविदास समदल समझावै कोऊ ॥ 3 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 1)

रागु गउड़ी

बेगमपुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥ नां तसवीस खिराजु न मालु खउफु न खता न तरसु जवालु ॥1 ॥ अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥1 ॥ रहाउ ॥ काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥ आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥ 2 ॥ तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥

कहि रविदास खलास चमारा ।। जो हम सहरी सु मीतु हमारा ।।3 ।।2 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 2)

ऐसी भगति न होयि रे भाई। राम नाम बिन जो कछु करीये सो सब भरम कहायी ।।टेक ।। भगति न रस दान भगति न कथै गियान। भगति न बन में गुफा खुदाई ।।1 ।। भगति न ऐसी हांसी भगति न आसा पासी। भगति न सब कुल कान गवाई ।।2 ।। भगति न इन्द्री बांधै भगति न जोग साधै। भगति न अहार घटायी ये सब करम कहायी ।।3 ।। भगति न निद्रा साधै भगति न बैराग बांधै। भगति न ये सब बेद बडाई ।।4 ।। भगति न मूड मुडाये भगति न माला दिखाये। भगति न चरन धुआये ये सब गुनी जन गायी ।।5 ।। भगति न तौलौं जानी जौं लौं आप को आप बखानी। जोई जोई करै सो सो करम बडाई ।।6 ।। आपा गयो तब भगति पायी ऐसी है भगति भाई। राम मिलियो अपने गुन खोइयो रिधि सिधि सभै जो गंवाई ।।7 ।। कहि रविदास छूटी सब आस तब हरि ताही के पास। आतमा थिर भयी तबही निधि पायी ।।8 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 4)

है सब आतम सुख परकास साँचो। निरंतर निराहार कलपित ऐ पाँचौ ।।टेक ।। आदि मधय औसान एक रस तार तूंब न तायी। थावर जंगम कीट पतंगा पूरि रहयो हरि रायी ।।२ ।। सर्बेस्वर सर्बङ्गी सर्ब गति करता हरता सोयी। सिव न असिव न साध अरु सेवक उनै भाव नहि होयी ।। 2 ।। धरम अधरम मोच्छ नहिं बंधन जरा मरन भव नासा। दृिसटि अदृिसटि गेय अरु गियाना एक मेक रविदासा ।।3 ।। (अमृतवाणी पन्ना 5)

कोउ सुमरन देखौं ये सब उपली चोभा ।। जा कै जेसी सुमिरन ता कौ तैसी सोभा ।।टेक ।। हमरी ही सीख सुनै सौं ही मांडे रे ।। थोरे ही इतरायी चालै पतिशाहि छाडे रे ।।1 ।। अतिही आतुर ह्वै कांचा ही तोले रे ।। ऊडे जल पैसे नहीं पांड राखो रे ।।2 ।। थोरे ही थोरे मुसीयत पराइयो धना। कहै रविदास सुनो सन्त जना ।।3 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 5)

गउड़ी पूरबी

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ।। ऐसे मेरा

मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥1 ॥ सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥1 ॥ रहाउ ॥ मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥ करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥2 ॥ जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥ प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥3 ॥1 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 10)

राग आसा

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥ पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥1 ॥ माधो अबिदिआ हित कीन ॥ बिबेक दीप मलीन ॥1 ॥ रहाउ ॥ त्रिगद जोनि अचेत संभव पुन पाप असोच ॥ मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥ 2 ॥ जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥ काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥ 3 ॥ रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥ भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥4 ॥ 1 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 11)

संत तुझी तनु संगति प्रान॥ सतिगुर गिआन जानै संत देवादेव॥ 1॥ संत ची संगति संत कथा रसु॥ संत प्रेम माझै दीजै देवा देव॥ 1॥ रहाउ॥ संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी॥ 2॥ अउर इक मागउ भगति चिंतामणि॥ जणी लखावहु असंत पापीसणि॥ 3॥ रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु॥ संत अनंतहि अंतरु नाही॥ 4॥ 2॥ (अमृतवाणी पन्ना 11)

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे॥ हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे॥ 1॥ रहाउ॥ हरि के नाम कबीर उजागर॥ जनम जनम के काटे कागर॥ 1॥ निमत नामदेउ दूधु पीआइआ॥ तउ जग जनम संकट नहीं आइआ॥ 2॥ जन रविदास राम रंगि राता॥ इउ गुर परसादि नरक नहीं जाता॥ 3॥ 5॥ (अमृतवाणी पन्ना 13)

राग गूजरी

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ॥ 1॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ॥ अवरु न फूलु अनूपु न पावउ॥ 1॥ रहाउ॥ मैलागर बेर्हे है भुइअंगा॥ बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा॥ 2॥ धूप

दीप नईबेदहि बासा ॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥ 3 ॥ तनु मनु अरपउ पूज चरावउ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥ 4 ॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ कहि रविदास कवन गति मोरी ॥ 5 ॥ 1 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 14)

राग सोरठि

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥ 1 ॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥ अब कहा करहुगे ऐसी ॥1 ॥ रहाउ ॥ मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहुबानी ॥ खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥ 2 ॥ आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥ 3 ॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ ॥ जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहु सहीऐ ॥ 4 ॥ 2 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 15)

सुखसागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जाके ॥ चारि

पदारथ असट दसा सिधि नवनिधि करतल ताके ॥ 1 ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥ 1 ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥ बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ 2 ॥ सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥ 3 ॥ 4 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 17)

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥ 1 ॥ माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥ तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥ 1 ॥ रहाउ ॥ जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥ 2 ॥ साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥ तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥ 3 ॥ जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥ तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥ 4 ॥ तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥ भगति हेत गावै रविदासा ॥ 5 ॥ 5 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 17)

राग बिलावलु

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥ असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥ 1 ॥ तू जानत मै किछु नही भवखंडन राम ॥ सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥ 1 ॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥ ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥ 2 ॥ कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥3 ॥ 1 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 29)

जिह कुल साधु बैसनो होइ ॥ बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥ 1 ॥ रहाउ ॥ ब्रहमन बैस सूद अरु खत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥ होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥1 ॥ धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥ जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥ 2 ॥ पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबर अउरु न कोइ ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥ 3 ॥ 2 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 29)

जो मोहि बेदनि कासनि आखूँ हरि बिन जीवन कैसे करि राखो ।।टेक ।। जिव तरसै इक दंग बसेरा करहु सँभाल तुम सिरजन मेरा ।। बिरह तपै तन अधिक जरावै, नींद न आवै भोजन न भावै ।। 1 ।। सखी सहेली गरब गहेली पिउ की बात न सुनहु सहेली ।। मैं रे दुहागनि अधिकरि जानी, गयो सो जोबन साध न मानी ।। 2 ।। तूं दाना सांईं साहिब मेरा, खिदमतगार बंदा मैं तेरा ।। कहै रविदास अंदेसा येही, बिन दरसन क्यों जीवहि सनेही ।। 3 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 32)

ऐसा ही हरि क्यूं पइवो, मन चंचलु रे भाई। चपल भयो चहुंदिस धावइ, राख्यो रहाई।। टेक।। मैं मेरी छूटइ नहिं कबहूं, मैं मंमता मदु बीध्यो। लोभ मोह महि रहयो रूझानौ, नित विषया रस रीझयो।। 1।। डंम कोह मोह माया बसु, कपट कूड़ हूं बंधायौ।। काम लुबधु को बसि परयौ, कुलकांनि छांड़ि बिकायो।। 2।। छापा तिलक छपौ नहीं सोभइ, जौ लौं केसौ नहिं गायो।। संजमि रह्यो न हरि हूँ सिमरियो, बिरथा भरमयो रू भरमायो।। 3।।

अनिक कौतक कला काछै कछे, बहुरि सांग दिखावौ।। मूरिख आपन आपु समुझि नहिं, औरनि का समुझावौ।।4।। आस करै वैकुण्ठ गवन कउ, चल मन कभउ न थिरायौ।। जौ लौं मन वसि नहिं हूं तौ, तौं लगि सभु जूठारियो।। 5।। कपट कीया रीझय नहिं केसौ, जगु करता नहिं कांचा।। कहि रविदास भजौ हरि माधौ, सेवग होवै मन सांचा।।6।। (अमृतवाणी पन्ना 33)

हम घर आयहु राम भतार, गावहु सखि मिल मंगलाचार। तन मन रत करहिं आपुनो, तौ कहुं पाइहिं पिव पिआर॥ 1॥ प्रीतम को जो दरसन पायि, मन मन्दिर महिं भयो उजियार। हौं मड़यि तै नौ निधि पाई, कृपा कीन्ही राम करतार॥ 2॥ बहुत जनम बिछुरे पिव पायो, जनम जनम तैं बिलयि रार। कहि रविदास हौं कछु नहिं जानौं, चरण कंवल महिं तुव मुरार॥ 3॥ (अमृतवाणी पन्ना 38)

राग भैरउ

ऐसा ध्यान धरौं बनवारी। मन पवन दिढ़ि सुखमन

नाडी ।।टेक ।। सोई जपु जपौं जो बहुरि न जपना। सोई तपु तपौं जो बहुरि न तपना ।। 1 ।। सोई गुरु करौ जो बहुरि न करना। ऐसी मरौं जो बहुरि न मरना ।। 2 ।। उलटी गंग जमुन में लयावो। बिनही जल मजन ह्वै आवौं ।।3 ।। लोचन भरि भरि बियंब निहारौं। जोति बिचारि न और बिचारौं ।। 4 ।। पिंड परे जीव जिस घरि जाता। शबद अतीत अनाहद राता ।। 5 ।। जा पर किरपा सोई भल जानै। गूंगौ साकर कहा बखानै ।। 6 ।। सुन्न मण्डल में तेरा बासा। ताथै जाव में रहौं उदासा ।। 7 ।। कह रविदास निरंजन ध्याउ, जिस घरि जाओ हौ बहुरि न आउ ।।8 ।। (अमृतवाणी पन्ना 64)

अबिगति नाथ निरंजन देवा। मैं का जानूं तुम्हारी सेवा ।।टेक ।। बाँधू न बंधन छांऊ न छाया। तुमहीं सेऊं निरंजन राया ।। 1 ।। चरन पताल सीस असमाना। सो ठाकुर कैसे संपुट समाना ।। 2 ।। सिव सनकादिक अंत न पाया। ब्रह्म खोजत जनम गंवाया ।। 3 ।। तोडूँ न पाती पूजूँ न देवा। सहज समाधि करूँ हरि सेवा ।। 4 ।। नख प्रसेद जा के सुरसरि धारा। रोमावली अठारह भारा ।। 5 ।। चारो

बेद जा के सुमिरत सांसा। भगति हेत गावै रविदासा ।।6 ।। (अमृतवाणी पन्ना 64)

गुरु सभु रहसि अगमहि जानैं। ढूंढै कोउ षट सासत्रन मंहि, किंधू को वेद वशानै।। टेक।। सांस उसांस चढ़ावै बहु विधि, बैठहिं सुंनि समाधी। फांटियो कानु भभूत तनि लाई, अनिक भरमत वैरागी।। 1।। तीरथ बरत करयि बहुतेरे, कथा बसत बहु सानै। कहि रविदास मिलियौ गुर पूरे, जिहि अंतर हरि मिलानै।।2 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 65)

राग आसावरी

केसवे विकट माया तोर ताते बिकल गति मोर ।।टेक ।। सुबिश डसन कराल अहिमुख ग्रसति सुदृिड सु मेश। निरूखि माखी बखत बियाकुल लोभ काल ना देख ।।1 ।। इंद्रियादिक दुख दारन असंख्यादिक पाप। तोहि भजत रघुनाथ अंतरि ताहि त्रास ना ताप ।।2 ।। प्रतिज्ञा प्रतिपाल चहुँ जुगि भगति पुरवन काम। आस मोहि भरोस है रविदास जै जै राम ।। 3 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 69)

तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु। पान करत पायो पायो रमइया धन।।टेक।। संपति बिपति पटल माया धन। ता महिं मगन न होत तेरो जन।। 1 ।। कहा भयो जे गत तन छिन-छिन। प्रेम जाइ तो जरपै तेरो निज जन।। 2 ।। प्रेम रज लै राखो रिदै धरि।। कहै रविदास छूटिबो कवन परि।। 3 ।। (अमृतवाणी पन्ना 71)

देहु कलाली एक पियाला। ऐसा अबधू होई मतवाला।।टेक।। कहै कलाली पियाला देऊ। पीवन हारे का सिर लेऊ।। 1 ।। ऐरी कलाली तैं क्या किया। सिर के साटै पियाला दिया।। सिर कै साटै महिंगा भारी। पीवेगा अपना सिर डारी।। 2 ।। चंद सूर दोउ सनमुख होई। पीवै पियाला मरै न कोई।। 3 ।। सहज सुन्न में भाठी स्त्रवै। पीवै रविदास गुरमुख द्रवै।।4।। (अमृतवाणी पन्ना 73)

ऐसी मेरी जाति विखियात चमारं।। हिरदे राम गोबिंद गुन सारं।।टेक।। सुरसरि जल लीया कृत बारुनी रे जैसे संत जन नाहिं करत पानं। सुरा अपवित्र निति गंगजल मानिये

सुरसरि मिलत नहिं होत आनं ॥ 1 ॥ तर तारि अपवित्र कर मानिये जैसे कागरा करत बिचारं। भगवत भगवंत जब ऊपरे लिखिये तब पूजिये करि नमस्कारं ॥2 ॥ अनेक अधम जिब नाम सुनि ऊधरे पतित पावन भये परसि सारं। भनत रविदास रंरकार गुन गाबंत संत साधु भये सहज पारं ॥3 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 74)

सतगुर हमहु लखाई बाट। जनम पाछले पाप नसाने, मिटेगौ सभु संताप।। टेक।। बाहर खोजत जनम गंवाए, उनमनि ध्यान रहे घट आप। शबद अनाहद बाजत घट मंहि, अगम ग्यान भौ गुर प्रताप।। 1।। धन दारा मंहि रहियो मगन नित, गुणियो न मिचु कौ चाप।। कहि रविदास गुरु राह दिखावै, तृिछा बुझि मिटि मन संताप।।2 ।। (अमृतवाणी पन्ना 75)

जो तुम तोरो राम मै नहिं तोरौं। तुम सों तोरि कवन सौ जोरौ ॥टेक ॥ तीरथ बरत न करौ अंदेसा। तुम्हरे चरन

कमल का भरोसा ॥1 ॥ जहँ जहँ जाओं तुम्हारी पूजा। तुम सा देव अवर नहिं दूजा ॥ 2 ॥ मैं अपनो मन हरि सो जोरियो। हरि सो जोरि सबन से तोरियो ॥ 3 ॥ सब पर हरि तुमारी आसा। मन क्रम बचन कहै रविदासा ॥ 4 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 78)

अब कैसे छूटै नाम रट लागी ॥टेक ॥ प्रभु जी तुम चंदन हम पानी ॥ जाकी अंग अंग बास समानी ॥ 1 ॥ प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा ॥ जैसे चितवत चंद चकोरा ॥ 2 ॥ प्रभुजी तुम दीपक हम बाती ॥ जा की जोति बरै दिन राती ॥ 3 ॥ प्रभु जी तुम मोती हम धागा ॥ जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ॥ 4 ॥ प्रभु जी तुम सुआमी हम दासा ॥ ऐसी भगति करै रविदासा ॥ 5 ॥(अमृतवाणी पन्ना 79)

माधौ! मोहि एकु सहारौ तोरा।। टेक।। तुमहि मात पिता प्रभ मेरो, हौं मसकीन अति भोरा। तुम जउ तजो कवन मोहि राखे, सहिहै कौनु निहोरा।।1।। बाहाडंबर हौं

कबहुं न जान्यौ, तुम चरनन चित मोरा। अगुन सगुन दौ समकरि आन्यौ, चहुँ दिस दरसन तोरा।।2।।पारस मनि मुहि रतु नहिं, जग जंजार न थोरा। कहि रविदास तजि सभ तृष्णा, इकु राम चरन चित मोरा।।3।।

(अमृतवाणी पन्ना 82)

राग टोडी

पावन जस माधो तोरा। तुम दारुन अघमोचन मोरा।।टेक।। कीरति तेरी पाप बिनासे लोक बेद यों गावै। जौं हम पाप करत नहिं भूधर तौ तूँ कहा नसावै।।1।। जब लग अंग पंक नहिं परसै तौं जल कहा पखालै। मन मलीन विषया रस लंपट तौं हरि नाम संभालै।।2।।जो हम बिमल हिरदै चित अंतरि दोस कौन पर धरिहौ।कहि रविदास प्रभु तुम दयाल हौ अबंध मुक्ति का करिहौ।।3।। (अमृतवाणी पन्ना 82)

सतनाम सतनाम सतनाम

***

पैंतीस अक्षरी

उ उसत्त करो इक ओंकारा।
तीन लोक जिन किया पसारा।

अ अलख को लखे जो भाई।
देहें ढंढोरा संत सिपाही।

इ ईश्वर काया घट में।
आकाश रमइयो जैसे सब मट में।

स शीश महल में स्वामि दर्शे।
जहां प्रेम अमी रस बरसे।

ह हरि का सिमरण कीजै।
कहे रविदास अमी रस पीजै।

क काया कोटि में रम रहयो प्यारा।
सीस महल में दे दीदारा।

ख ख्याल से करो विचारा।
सर्वव्यापी सब से न्यारा।

ग गोबिन्द ऐसे ज्ञानी।
न कुछ भूले न कुछ जानी।

घ	घन नहीं अहरण सहे चोटां।
	सतगुरु शब्द घड़्या है अनोठा।
ङ	ङयानत सोई सार।
	रहे रविदास बात विचार।
च	चाम का चोला भाई।
	नाम बिना कुछ काम न आई।
छ	छिन में भया ममोला।
	अमी सरोवर दिया झकोला।
ज	जीव है, जनेऊ जाति का।
	दया की धोती तिलक सत्य का।
झ	झिलमिल जोत जगाई।
	अलख पुरुष तहां पहुंचे आई।
ञ	ञयानत सोई ध्यानी।
	दास रविदास कहे ब्रह्म ज्ञानी।
ट	टैका टेर का एक राखो।
	एक बिना दूजा मत आखो।
ठ	ठाकुर शीला तर गए भाई।
	पंडित बैठे मन मुरझाई।

ड	डर नहीं हरि संग प्रीत।
	भगत जन बैठे मन को जीत।
ढ	ढा दीनी बुर्जीपापन।
	सिमरण कीना अजपा जपन।
ण	णम की लाई डोरी।
	कहे रविदास लगी लिव मोरी।
त	त्रिगुण माया रचदी भाई।
	ऋषि मुनि लीने भरमाई।
थ	थिर नहीं यह संसारा।
	राव रंक सब काल नगारा।
द	दो इक दिन यहां मन्दिर सारा,
	फिर ठाठ छोड़ लद जाये बंजारा।
ध	धनी जिन ध्यान लगाइओ।
	काल फांस के बीच न आइओ।
न	नाम की नाव बनाई।
	कहे रविदास चढ़ो रे भाई।
प	पार ब्रह्म परमेश्वर स्वामी।

सब घट-घट के अन्तरयामि।

फ फिकर कर छोड़ जगसंसा।

जा मिल बैठे अविनाशी पासा।

ब ब्रह्म सो ब्रह्म का वेता।

गगन मंडल में राखो चेता।

भ भ्रम मिटे जो पंचम सीजे,

जाये त्रिवैणी मजन कीजे।

म मन को गगन समाओ।

कहे रविदास परम पद पाओ।

य याद करो, वाह के गुण गाओ।

पार ब्रह्म के दर्शन पाओ।

र राम रमे सो राम प्यारा।

फिर न देखया जम का द्वारा।

ल लिव लगा ले भाई।

जम का त्रास निकट न आई।

व विधीवध सिमरन कीजै।

सोहं नाम अमी रस पीजै।

ड़ ड़ाड़ मिटि जब हुआ नबेड़ा,
कहे रविदास किया अमर घर डेरा
सोहं शब्द मन किया बसेरा।
मेट दिया चौरासी का फेरा।

ओंकार बावन का पैंतीस में जपयो है सार।
सर्व देव संतन को करें हैं नमस्कार।
पैंतीस मात्रा प्रेम से सिमरें हैं निज दास।
जिन सिमरियो सो मुक्त हैं कहे सद रविदास।
ओंकार पैंतीस मात्रा प्रेम से निसवासर कर जाप।
रविदास कहे जो सिमरते, मिट गये तीनों ताप।
ओंकार पैंती मात्रा प्रेम से सिमरण कीयो मन वैराग।
रविदास कहे जो सिमरते, तिन के पूरण भाग।
पैंतीस मात्रा प्रेम से सिमरते रवि प्रकाश।
रविदास कहे जो सिमरते, मिट गये जम के त्रास।
रविदास सिमरत रमते राम में, सत शब्द प्रतीत।
अमर लोक जाये वसियो, काल कष्ट को जीत।

ओंकार सप्त सलोकी मात्रा, सत कीयो जगदीश।
अमर लोक वासा कीया, काल नमावें शीश।

(अमृतवाणी पन्ना 114)

सतनाम सतनाम सतनाम

* * *

॥ पदे ॥

सतनाम सतनाम सतनाम

1.

सोहं ओंकार निरविकार आनादि, आखंड धयान सारूप॥ अजर अमर आदि करना, पुरष अटल अनूप॥ कृपा करते दयाल जी, काटे बंधन करूप॥ साहिब बखशीश सत सुण, दास कर निज रूप॥ सच नाम को सिमर कर, जीव भये तत रूप॥ रविदास कहे भज नाम को, पावे शुद्ध सवरूप॥

2.

गुर की मूरति मन विखे, धरो सो हर दम धयान॥ नाम दान इश्नान कर, दवारे पावे मान॥ मंतर जप गुर हिरदे में, मिले सो निश्चल ज्ञान॥ भूख, प्यास ना उतरे, नाम

बिना भगवान॥ सतगुर सो नहीं पावई, जो दिल मांहे सुआन॥ मन सच्चा कित बिध भयो, कर है किया बियान॥ झूठा पालन पालते, कहो कैसे कल्याण॥ आज्ञा गुर की चित्त धर, कहे रविदास बिखान॥

3.

कर एकागर बरित को, सिमरे नित करतार॥ साहिब की सब रीति का, कौण कथे विसतार॥ तिस की कुदरत अति बड़ी, जाणै कौण विचार॥ सदगुण नित हिरदे बसे, मिलसी ठौर आपार॥ गुर की लखो दिआलत, सतगुर कीयो पसार॥ कहे रविदास भगवान ने, दास दीये जग तार॥

4.

प्रथमें सत सवरूप था, वहि अबिनाशी आप॥ मदय विआपक हो रहा, तिस को तूं मन जाप॥ अन्त समय भी रहोगे, निरंकार परताप॥ मन बाणी कर के भजे, मुंचित किल विष पाप॥ दाता करता आप है, धरति आकाश वियाप॥ महिमा बहुत बेअंत है, सतगुर ते होऐ थाप॥ सोहं नाम की धुन लगी, दिल के अन्दर आप॥ कहे रविदास विचार के, जानो गुर प्रताप॥

5.

जाप जपो तुम नाम का, कर सतगुर की सेव ॥ गावत हिरदे नाम के, बूझत निज गुरदेव ॥ नाम सत्य संसार में, पदारथ झूठ स नेव ॥ दुबधा अन्तर की तजे, नित सतसंग करेव ॥ आचार धरो गुर रीत के, मंगल नितय वधेव ॥ कहे रविदास विचार के, साहिब देवन देव ॥

6.

अंतर कर गावे सदा, हृदय कर भरपूर॥ खोटे कर्म तिआगसी, पाप भय सब दूर ॥ काग रूप तज हंस हो, विकार ना करहो भूर ॥ देव देह तुझ को दई, प्रतखश जान जरूर॥ कथना कथे ना हरि मिले, पावे खोजन नूर ॥ कहे रविदास विचार के, रहो भगवान हजूर ॥

7.

देवन वाला देत है, तिस की कर मन आस॥ सर्व युगी प्रति पालीया, तेरी मिटी ना खाहश॥ अंतरयामी जानता, लेखे सास गरास॥ आज्ञा गुर की चित धर, साधन को रख पास ॥ बखशण हारा बखशसी, प्रभु का होऐ दास ॥ भाषण कर गुर नाम को, अंतर रख प्यास ॥ अमृत वेला नाम सत, चार युगों में भास ॥ सत संतोष धारण धरो, कहत भये रविदास ॥

8.

तन मन धन अर्पण करो, बाणी जप हरि मीत॥ सत संगति कर संत की, दुष्ट त्यागो रीत॥ सवास सवास सिमरन करो, जनम आमोलक जीत॥ सोहं नाम के भजन से, दूर होए भ्रम भीत॥ तूंही तूंही रटता रहे, और ना लावे चीत॥ मान पाए जिन सेविया, प्रभ सो पाए प्रीत॥ नाम निशान प्राप्ते, जो गावत हरि के गीत॥ रविदास कहे सतसंग में, अवय पद सतगुर दीत॥

9.

गुरमुख सेती प्रीत रख,कुकरम से मन बंद॥ सत गोविन्द गोपाल गुर, और आवन जान सन्बंध॥ अन्धेर मचयो सरब जगत में, परकाश न बिन गुर चंद॥ नितय पड़न गुरमुख सत, जानत भय सरब संद॥ गुर ही धारे रूप सब, खेले खेल आनन्द॥ जन रविदास पुकारते, जपो ओअं कर बंद॥

10.

सरब ही साहिब एक है, दूसर कौन कहाए॥ मुक्ति ना पावे भजन बिन, जो उत्तम आप सदाए॥ ठाकर नदर ना आवही, कबहूं ना लेखै लाए॥ जो चाहे कल्याण को,

सतगुर लए मनाए॥ गुण वंतिआं संग गुण वसे, जो तूं ध्यान लगाए॥ रविदास कहे संसार में, बहुरि ना जन्में धाए॥

11.

नाम धियावे देव मुनि, करता पुरष आगंम॥ सीस दान कर हरि मिले, तूं ना जान सहंम॥ ठाकर सदा समीप है, तिस बिन निहफल और॥ गुर गोपाल धियय तूं, मन आपणा कर भौर॥ बन्धन कौन छुड़ावसी, कीए बिना मन धर्म॥ काटे गोबिन्द जन्म, मरन दूर होए सभ भरम॥ साहिब दीन दियाल सदा, सोई मनो पुकार॥ कहे रविदास प्रीति हरि, मन में राख विचार॥

12.

तिस जेवड दाता नांहि को, गुर आपरंपर सोए॥ गुर बिन सुरत ना सतय है, भरम थक्के सब लोए॥ देव नाथ और सिद्ध सर्ब गुर माने ते होए॥ धरती वयोम विचारिया, तिस ते भिन्न ना कोए॥ पाताल पुरी जयकार धुन, कच्छ मच्छ भी जोए॥ दाना, दाता, शीलवन्त, उपकारी जग होए॥ इंद्र ब्रहमा महेश गण, पवन बसंतर तोए॥ यह सब बपुरे कीट सम, लखे ना साहिब जोए॥ कहे रविदास पुकार कर, भरम भीत मन खोए॥

13.

अठ सठ तीर्थ पुन्न फल, होवत जो सच जाग ॥ ध्यान धरो प्रभू भजन में, तो होवे बड भाग ॥ मन का मणका फेर लए, विरती का कर ताग ॥ शरवण कर के ही भयो, ऐ जग सगरो बाग ॥ साहिब के सतसंग में, रहो मन सद ही लाग ॥ जन रविदास सोहं गुण भज, मन मत अपनी त्याग ॥

14.

गुणों का होवे सागरा, ध्याय निरंजन नाम ॥ नाम गुर का वोहिथा, तेरे आवै काम ॥ करता चित्त ना आवही, भूल गया तूं नाम ॥ प्रभू का सिमरन छोड के, खोटे करता काम ॥ औगुण तेरे दूर हो, पर तूं गुर की शाम ॥ आठ पहिर भगवान भज, निकट ना आवे जाम ॥ सवास सवास मन भजन करो, सिमरो श्री गुर नाम ॥ रविदास कहे गुर शरण में, पावे सुख विश्राम ॥

15.

गुरदेव दोवारे तेरा मान हो, निधआसन करे निहाल ॥ जहां बैठे तहां सोभ हो, कबहूं ना होए बिहाल ॥ गुरमुख की रीति धरो, गुरमुख की चलो चाल ॥ एक ध्याना एक

में, कर तूं यह संभाल ॥ कारण करते अंत ना, तिस की प्रीति निहाल ॥ पूरा सतगुर मिलत है, प्राप्त होवे घाल ॥ वसतु नाम प्राप्ते, हृदय, कर लै थाल ॥ शोभा पावे देह में, कहे रविदास विशाल ॥

16.

कुदरत कौन विचार है, कोई ना जाने भेत ॥ सर्व ही शक्तिमान गुर, भूले मन लए चेत ॥ गुर बिन आदि वियादि में, तीनों ताप जरेत ॥ गुरु गोबिन्द प्रताप से, होत जात सर्व सेत ॥ नाम लीए अघ जाएंगे, पापा मूल हरेत ॥ जन रविदास अधीन हो, करो स्वामी हेत ॥

17.

तिस बिन दूसर अवर ना, निरंकार को देख ॥ अमर अजर भरपूर गुर, घटि घटि मांहि सुलेख ॥ निरंकार सद सदीव सोए, साहिब सर्व विशेष ॥ शरधा से प्रीतम मिले, पावत सर्व ही भेख ॥ ताप तपे मन मार के, होत जात है शीव ॥ उदास रहे संसार में, बहु बिअंत ही जीव ॥ आतम देर बसाया, हृदय में कर वास ॥ जग में आया सुफल है, कहत भयो रविदास ॥

18.

नाम धनी का सत सदा, गुरदेव राख मन टेक ॥ अन्तर धरीं ध्यान तूं, बिृति को कर एक ॥ अंत करण सुधार के, सोहं मनि करो पाठ ॥ सतगुर की दरगाह में, सुंदर होवे ठाठ ॥ गुर की किया उपमा कथो, अदभुत लीला रीत ॥ प्रेम बिछोरा ना जरे, मीन समान है प्रीति ॥ ओअं ओअं ध्यान धर, सोहं भेद विचार ॥ तत रूप होए जनमनां, कहे रविदास आचार ॥

19.

दुरमति का त्यागन करो, लेहो गुरमत खोज ॥ खोटन की संगत तजो, किऊं सिर पर उठाओ बोज ॥ गुर शरण में मन लागे, छूटे माया बंध ॥ आगे मुश्किल ना बणे, होए नाम सनबंध ॥ झूठ बोल, झूठा बणे, झूठ तियागो गैल ॥ जन रविदास विचारिया, गली, गली कर सैल ॥

20.

भगवान आतम देव का, करो मन अपने जाप ॥ नाम बडाई मनन कर सब तापन सिर ताप ॥ गति रीति ना कहि सको, जो माने गुर वाक ॥ कागज़ मिले ना प्रेम को, कलम लिखे नहीं साख ॥ बैठ विचारो मन विखे, सतगुर

ध्यान लगाए॥ संगत का फल पाव है, पाप नरंचक लाए॥ बाणी रटो गुर, गुर सदा, अंतर लए सुख भास॥ मार्ग पावत लाभ हो, कहत सतय रविदास॥

21.

जीभा कांती मन करो, सान चड़ावो तेज॥ सचखंड में जा मिले, सतगुर देवे भेज॥ धर्म साथ संबंध जो, कुल तारन की चाल॥ प्रात कमाई अपणी, पाए मुशक्कत घाल॥ मुक्ति दवारा पाव है, चिंतन नाम हमेश॥ गुर सेवक की रीति लख, सतगुर जान नरेश॥ जोन, जोन भरमत नहीं, मनन के संग साथ॥ जन रविदास पुकारते साहिब कीनी दात॥

22.

वेराग विवेक ततीखशा, सम दम आदि ले खोज॥ मोमोखश बन सतसंग में, लेह परमातम मौज॥ तत तवं साधन भने, मुनिवर मति सुधीर॥ कथने मातर ना मिले, सोधन करो सरीर॥ मन इंद्रिय मलकर भरे, ततव मसी कहे आप॥ अंतशकरण भी शुद्ध नहीं, लागत सर्व ही पाप॥ पापी कर्म कमावना, सो सतसंग में नास॥ कलि के दोष सब दूर हो, कथन करे रविदास॥

23.

आपणा बीज तूं आप ही, खावत है बहु बार॥ तेरा ही तुझे सौंपता, वह दाता करतार॥ जो गुर शरणी परत है, तिल भर भी बेअंत॥ शोभा पावे लोक में, कहित मुनी जन संत॥ नरकन के अधिकार को, शीघर मन दे त्याग॥ भजन करो भगवान का, मिले रविदास बेराग॥

24.

गुण आवे गुण उचारे, गुण में रहे समाए॥ गोविंद गुरू, गोपाल गुरू, करता पुरष बसाय॥ भगवान भजन में सुख सदा, होर है सुख ना काए॥ कर विश्वास मन आपणे, सतगुर चरनी धाऐ॥ सत सुन्दर अति, अगंम अपारा॥ खेल साहिब का, सभ से नियारा॥ निरमल आतम सवरूप, लखि सरीर होऐ पवीत॥ सचखंड में जा बसे, कहे रविदास तूं मीत॥

25

नारायण रंग करे जग, धारे रूप अजैब॥ दीन दिआल कृपाल प्रभू, धन सिरजनहार सुसाहिब॥ सुण सुण के उपमा भने, कवी ग्रंथ कुरान॥ काजी, मुल्ला कहित है, अप अपणी सभ मान॥ भेष, पंथ, योगी, यती, लखे ना

सो अनजाण॥ आप हो उतपत प्रपंच कर, आप करत भय हानि॥ घड़ी महूरत जाणते, वह अपरंपर देव॥ देव, दनुज, मानुष, सभी, लागे तिस की सेव॥ अमर पहिचाने गुरू का, सो दास जाने निज भेव॥ जन रविदास विचारिया, सुख पावत नित सेव॥

26.

नाम ध्यावे सिद्ध भये, जपन जपो बहु बार॥ सतगुर के संग लाग कर, लोहा होवे पार॥ गुरू गोपाल जहाज युग, गुर मनसा पूरन हार॥ साहिब की उपमा भनो, मुख से लख लख वार॥ मित्तर तेरा और नहीं को, तूं देखी नदर पसार॥ नदरी नदर सुधार मन, कहे रविदास विचार॥

27.

वरनण कर के को कहे, जग पालक परशंस॥ अंतर करो मिलाप गुरू, सुभ गुण की बसे बंस॥ सतगुर के उपदेश कर, निर्मल होवे हंस॥ सतिगुरू दाता अति बड़ा, ब्रहम जानीए अंस॥ ऐसा नाम निरंजनी, अंतर लए बसाए॥ हाथ जोड़ उसतति करो, गुर राखे सत भाए॥ ब्रहंम वकता, ब्रहम सोत्री, ब्रहंम निसठा गुरू असंस॥ सतगुर संग प्यार कर, कहे रविदास बडहंस॥

28.

दाता सब गुण बड़ा है, किरत ना मेटे कोए॥ समुंदर सागर से जी तरे, किरपा करता सोए॥ वेद कथे, शास्तर कथे, तिस बिन अवर ना कोए॥ ना हूआ, ना होएगा, जानत है जग लोए॥ नाम जपो तिस धनी का, मात गर्भ नहि पोहि॥ सतगुर की कर बंदगी, संशय सकल मिटोए॥ गिर, पृथ्वी, चंद, सूर, सभ, धारत है भगवंत॥ रविदास कहे अलपग यह, जानत है किआ जंत॥

29.

गुरमुख दवारा नाद सुण हृदय मांह ले बूझ॥ सुरत धरो मत उपजै, नेतरीं होवे सूझ॥ मिले ना सतगुर शब्द तोहि, अंतर भरी है दूज॥ अमर होवे सतसंग में, मन अपने से झूज॥ श्रेष्ठ पुरूष का संग कर, मान करो सभ चूर॥ मन हसती सकल जरो, पापन को जो मूर॥ साहिब सेती प्रेम कर, रसातल से जा बच॥ गुर, गुर मन में रटन कर, मुख से बोल तूं सच॥ संतन के दवारे परो, होवे परम आनन्द॥ कहे रविदास भगवान के, गावो मन में छंद॥

30.

पताल रसातल आनन्त है, खोजन हारे लोक॥ प्रभु माया

को अंत ना, ढूंडत करते शोक ॥ जीव वितल है, जीव में, जीव सुतल सो जीव ॥ जीव तलातल, महातल, साहिब लख लै सीव ॥ अतल सात पाताल यह, जीव ईश लखि लेव ॥ इस बिधि अंत ना आवे है, खै पताला भेव ॥ बुद्धि कितने बल धारे, लागत ना कोई ताण ॥ गुरमुख मन बसाईए, मानक नाम निशाण ॥ चींटी के सम बल नहीं, चाले तेरा जोर ॥ नाम बिना भगवान के, लाख मचावे शोर ॥ उतरे आवरण दिले का, मन आपणा ले साध ॥ कहे रविदास पुकार के, दूर करो सब वयाध ॥

31.

नदियां लहिरीं बस रहा, सागर अति गंभीर ॥ चौदह रतन उपाया, सतगुरू गुणी गहीर ॥ ऊठत, बैठत नाम भज, सो पावत सत सीर ॥ मन अपणे गुरू गुरू रटो, कभी ना होवे भीर ॥ मुख पवित्र होत है, गुण गावत दीन दिआल ॥ सरब घटा भरपूर है, अंतरयामी पाल ॥ तुझे भरोसा ना पड़े, इस कारण कंगाल ॥ रविदास कहे संसार में, अब भी कर तूं भाल ॥

32.

एक घड़ी सिमरन करो, नहीं लागे कलू कलेश ॥ प्रभू के

दरबार में, होवे उज्जल भेष॥ पतित उधारण पारब्रहम, गुरू अविनाशी आप॥ श्रेष्ट पुरष का संग करो, शुभ गुण मन में थाप॥ अथाह प्रभू हर धनी है, गुर का नाम अतोल॥ सवास आमोलक सुफल कर, जिस का ना कोई मोल॥ रविदास कहे आश्चर्य वह, हरि मिलने की रीति॥ सवासा बिरथा न तजो, मन कर करो प्रीति॥

33.

निहाल, निहाल, निहाल है, वह करतार निहाल॥ कल्याण तेरा कल्याण हो, चरणी परो विसाल॥ ऐसी मनो प्रीति कर, जैसी चकवी सूर॥ जन रविदास ब्रहम रंग राता, औगुण हो सभ दूर॥

34.

साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना परे आकार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना सिफत शुमार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना कहे उचार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना करे विचार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत नहीं कछु लेस॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत नहीं कछु भेस॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत नहीं करतार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना पारावार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत

ना सतगुर धाम ॥ कहे रविदास पुकार के, सिध भये सभ काम ॥

35.

सतगुरु उंचा अत बड़ा, सत उंचा वड नांओ ॥ नाम निरंजन गुर सदा, मन माना फल पाओ ॥ कितने ही योधे भय, शूर हुए आपार ॥ सोहं नाम का मेल हो, नौका बने आधार ॥ काम, क्रोध, ठग्ग ठगत है, राखो चित्त संभाल ॥ सत परमातम वेधिया, सभी करे प्रतिपाल ॥ कितने प्रभू के भगत भये, कितने हुए अवतार ॥ कितने पंडित, ज्योतिषी, वेदां करे विचार ॥ कितने ही ब्रहिमंड हैं, करता गुरू समरथ ॥ कितने ही उसतति करे, दीन दयाल अकथ ॥ कितने मूरख जगत में, रूप भय विकराल ॥ कितने देवी, देवते, कितने काल, कराल ॥ यह सभ खेल गोविंद के, अंत ना आवे कोए ॥ कहे रविदास विचार के, प्रभु में रहो समोए ॥

36.

सतगुर का धर ध्यान तूं, सतगुर संग निवास ॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, गुर का नाम प्यास ॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, गुरू निरंजन लाल ॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, लिखत

लेख सो भाल॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, साधू मत विचार॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, अंतर कर लै सार॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, लोभ विकार तियाग॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, कर्त्तव्य नीच विहाग॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, गर्भ ना आवे मूल॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, विषय रस जा भूल॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, केवल होवे मुक्ति॥ कहे रविदास विचारिया, ऐहो सार है युक्त॥

37.

सोहं, सोहं उचारीये, श्रेष्ठ पुरष संग प्यार॥ सोहं, सोहं उचारीये, कबहू न आवे हार॥ सोहं, सोहं उचारीये, गुर का नाम गहीर॥ सोहं, सोहं उचारीये, खोजे मत सुधीर॥ सोहं, सोहं उचारीये, भजन करो गुरदेव॥ सोहं, सोहं उचारीये, ता जाने निज भेव॥ सोहं, सोहं उचारीये, संध्या समय ध्यान॥ सोहं सोहं उचारीये अमृत वेला गयान।।सोहं, सोहं उचारीये, साकत संग न होय॥ सोहं, सोहं उचारीये, निर्मल होवे सोय॥ सोहं, सोहं उचारीये, करन कारन अलेख॥ कहे रविदास पुकार के, मन नीवां कर देख॥

38.

सतगुर साहिब अति बड़ा, पावत ना कोई पार ॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, जानत विरला सार ॥ सतगुर साहिब अति बड़ा,अंधयारे में दीप ॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, सुंदर मोती सीप ॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, अवर ना जाने भेत ॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, भूले मन तूं चेत ॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, नाम जपो मन मांहे ॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, दास उधारे तांहे ॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, रोम रोम में वास ॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, निसचे कहे रविदास ॥

39.

निरंजन निरंकार प्रताप, मन कर जपे गुरू, गुरू आप ॥ निरंजन निरंकार सभ दात, गुणी विचारो मन सभ भात ॥ निरंजन निरंकार भगवान, आठ पहिर धर तांका ध्यान ॥ निरंजन निरंकार अविनासी, जनम, मरण की काटे फांसी ॥ निरंजन निरंकार करतार, सर्व दुःखों का उतरे भार ॥ निरंजन निरंकार भवज्योती, दुरमत दुबिधा अंतर ना होती ॥ निरंजन निरंकार नारायण भज, सर्व सुखों का होए आयण ॥ निरंजन निरंकार गोपाल, जीव जंत की करे प्रतिपाल ॥ निरंजन निरंकार नर नाथ, सर्व पदार्थ

तिस के हाथ ॥ निरंजन निरंकार प्रकाश, भज हृदय कहो रविदास ॥

40

ओअं, ओअं, ओअं नीत, मन धर सच भगवान प्रीत ॥ ओअं, ओअं, ओअं ध्यान, सच सच सभ सच ही मान ॥ ओअं, ओअं, ओअं पूजा, देवी देवा तिस बिन दूजा ॥ ओअं, ओअं, ओअं सतसंग, नाम ध्याये मन कर रंग ॥ ओअं, ओअं, ओअं जप लीजे, मुगध पत्थर भव नरि तरीजे ॥ ओअं, ओअं, अमर कल्याण, अंतर हृदय चड़े हर भान ॥ ओअं, ओअं, गुण विखयान, पवित्र गुणों की होवे कान ॥ ओअं, ओअं, तेरा अधिकार, पाप रोग सभ उतरे भार ॥ ओअं, ओअं, ओअं दिन रैन, सोहं भज मन होवे चैन ॥ कहे रविदास लख गुर की करनी, सवास, सवास पर हरि की चरणी ॥

(अमृतवाणी पन्ना ९१)

सतनाम सतनाम सतनाम

* * *

संध्य समय की अमृतवाणी

सतनाम सतनाम सतनाम

राग धनासरी

हम सरि दीनु दआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ।। बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ।।1 ।। हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने।। कारन कवन अबोल ।। रहाउ ।। बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ।। कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ।।2 ।।1 ।। (अमृतवाणी पन्ना 20)

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ।। मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अमृत राम नाम भाखउ ।।1 ।। मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ।। मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ।।2 ।। रहाउ ।। साध संगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ।। कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ।।2 ।।2 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 20)

मेरी प्रीति गोपाल सों जन घटै हो। मै मोल महिंगै लई तन सटै हो ।।टेक ।। रिदै सुमिरन करूँ नैन अवलोकनो स्रवना हरि कथा पूरि राखूँ। मन मधुकर करौं चरना चित्त धरौं राम रसायन रसन चाखूँ ।।1 ।। साधु संगति बिना भाव नहिं ऊपजै भाव बिन भगति क्यों होइ तेरी। बंदत रविदास राज राम सुनु बीनती गुर प्रसाद कृपा करो न देरी ।।2 ।। (अमृतवाणी पन्ना 22)

दरशन दीजै राम दरशन दीजै। दरशन दीजै बिलंब न कीजै ।।टेक ।। दरशन तोरा जीवन मोरा। बिन दरशन क्यों जिवै चकोरा ।।1 ।। माधो सतिगुर सब जग चेला। अब के बिछुरे मिलन दुहेला ।।2 ।। धन जोबन की झूठी आसा। सत सत भाखै जन रविदासा ।।3 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 23)

राग जैतसरी

नाथ कछूअ न जानउ ।। मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ।।1 ।। रहाउ ।। तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ।। हम कहीअत कलिजुग के कामी ।।1 ।। इन

पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥ पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥2 ॥ जत देखउ तत दुख की रासी ॥ अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥3 ॥ गोतम नारि उमापति स्वामी ॥ सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥4 ॥ इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥ बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥5 ॥ कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥ बिन रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥6 ॥ 1 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 25)

राग सूही

सह की सार सुहागनि जानै॥ तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥ तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥ अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥1 ॥ सो कत जानै पीर पराई ॥ जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥1 ॥ रहाउ ॥ दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥ जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥ पुर सलात का पंथु दुहेला॥ संगि न साथी गवनु इकेला ॥2 ॥ दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥ बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥ कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥ जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥3 ॥1 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 26)

राग गोंड

मुकंद मुकंद जपहु संसार॥ बिनु मुकंद तनु होइ अउहार॥ सोई मुकंद मुकति का दाता॥ सोई मुकंद हमरा पित माता ॥1 ॥ जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥ ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥1 ॥ रहाउ ॥ मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥ जपि मुकंद मसतकि नीसानं॥ सेव मुकंद करै बैरागी ॥ सोई मुकंदु दुरबल धन लाधी ॥2 ॥ एक मुकंदु करै उपकारु ॥ हमरा कहा करै संसारु ॥ मेटी जाति हुए दरबारि॥ तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥3 ॥ उपजिओ गिआन हुआ परगास॥ करि किरपा लीने कीट दास॥ कहु रविदास अब त्रिसना चूकी ॥ जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥4 ॥1 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 39)

जे ओहु अठिसठि तीरथ न्हावै॥ जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥ जे ओहु कूप तटा देवावै ॥ करै निंद सभ बिरथा जावै ॥1 ॥ साध का निंदकु कैसे तरै॥ सरपर जानहु नरक ही परै ॥1 ॥ रहाउ ॥ जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥ अरपै नारि सीगार समेति ॥ सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै ॥

करै निंद कवनै नही गुनै ।।2 ।। जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ।। भूमि दान सोभा मंडपि पावै ।। अपना बिगारि बिरांना सांढै ।। करै निंद बहु जोनी हांढै ।।3 ।। निंदा कहा करहु संसारा ।। निंदक का परगटि पाहारा ।। निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ।। कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ।।4 ।।2 ।। (अमृतवाणी पन्ना 40)

आज दिवस लेऊँ बलिहारा ।। मेरे गृह आया राजा राम का प्यारा ।। टेक ।। आँगन बगड़ भवन भयो पावन ।। हरिजन बैठे हरिजस गावन ।।2 ।। करूँ डंडोत चरन पखारूं ।। तन मन धन संतन पर वारूँ ।।3 ।। कथा कहैं अरु अर्थ बिचारैं ।। आप तरैं औरन को तारैं ।।4 ।। कह रविदास मिलै निज दास ।। जनम जनम कै काटै पास ।।5 ।।

राग रामकली

पड़ीऐ गुनीऐ नाम सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ।। लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ।।1 ।। देव संसै गांठि न छूटै ।। काम क्रोध माइआ मद मतसर

इन पंचहु मिलि लूटै ॥1 ॥ रहाउ ॥ हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥ गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥2 ॥ कहु रविदास सभै नही समझसि भूल परे जैसे बउरे ॥ मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥3 ॥1 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 42)

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ। गावणहार कूँ निकट बताऊँ ॥ टेक ॥ जब लगि है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा। जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावणहारा ॥1 ॥ जब लग नदी न समुद समावै, तब लग बडै हंकारा। जब मन मिल्यौ राम सागर सो, तब यह मिटी पुकारा ॥2 ॥ जब लग भगति मुकति की आसा, परम तत्त सुणि गावै। जहाँ जहाँ आस धरत है यह मन, तहाँ तहाँ कछु न पावै ॥3 ॥ छाड़ै आस निरास परम पदु, तब सुख सति कर होई। कहै 'रविदास' जासूँ और कहत है, परम तत्त अब सोई ॥4 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 44)

ऐसो कुछु अनुभौ कहत न आवै ।। साहिब मिलै तो को बिगरावै ।। टेक ।। सब में हरि है हरि में सब है हरि अपनो जिन जाना ।। साखी नहीं और कोई दूसर जाननहार सयाना ।।1 ।। बाजीगर सों रचि रहीये बाजी का मरम न जाना ।। बाजी झूठ साँच बाजीगर जाना मन पतियाना ।।2 ।। मन थिर होइ तो कोई न सूझै, जानै जाननहारा ।। कहै रविदास बिमल विवेक सुख सहिज सरूप संभारा ।।3 ।। (अमृतवाणी पन्ना 49)

नरहरि चंचल है मति मोरी कैसे भगति करूँ मैं तोरी ।।टेक ।। तूँ मोहिं देखै मैं तोहि देखूँ प्रीति परस्पर होई ।।1 ।। तूँ मोहिं देखै हऊं तोहि न देखूँ ऐहु मति सब बुधि खोई ।।2 ।। सब घट अंतर रमसि निरंतर मैं देखत हूँ नहीं जाना ।। गुन सब तोर मोरि सब औगुन कृत उपकार न माना ।।3 ।। मैं तो तोरि मोरी असमझिस कैसे करि निसतारा ।। कहि रविदास माधो करुणामय जै जै जगत अधारा ।।4 ।। (अमृतवाणी पन्ना 51)

तब राम नाम कहि गावैगा ॥ रारंकार रहित सभहिन में अंतरि मेल मिलावैगा ।।टेक ॥ लोहा कंचन सम कर देखै भेद अभेद समावैगा ॥ जो सुख होवै पारस के परसे सो सुख वा को आवैगा ।।1 ॥ गुर प्रसादि भई अनुभैमति विष अमृित सम ध्यावैगा ।।2 ॥ कहै रविदास मेटि आपा पर तब वा ठौरहि पावैगा ।।3 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 51)

राग‍ु मारु

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्र धरै ।।1 ॥ रहाउ ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै ॥ नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ।।1 ॥ नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥ कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ।।2 ।।1 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 57)

पीआ राम रसु पीआ रे ।।टेक ॥ भरि भरि देवै सुरति

कलाली दरिया दरिया पीना रे। पीवत पीवतु आपा जग भुला हरि रस मांहि बौराना रे ॥1 ॥ दर घरि विसरि गयो रविदासा उनमनि सद मतवारी रे। पलु पलु प्रेम पियाला चालै, छूटे नांहि खुमारी रे ॥2 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 58)

राग केदारा

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि॥ चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि॥1 ॥ रे चित चेति चेत अचेत॥ काहे न बालमीकहि देख॥ किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख॥1 ॥ रहाउ॥ सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु॥ लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस॥2 ॥ अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पास॥ ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास॥3 ॥1 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 60)

राग मलार

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं॥1॥ रहाउ॥ सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं॥1॥ तर तारि अपवित्र कर मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं॥ भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं॥2॥ मेरी जाति कुटबांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आसा पासा॥ अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा॥3॥1॥

(अमृतवाणी पन्ना 67)

राग सारंग

चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ॥टेक॥ गुर की साटि ज्ञान का अच्छर बिसरै तों सहज समाधि लगाऊँ॥1॥ प्रेम पाटी सुरति लेखनि करिहौ ररा ममा लिखि आंक दिखाऊ॥2॥ येह बिधि मुक्त भये सनकादिक रिदै बिदारि प्रकाश दिखाऊँ॥3॥ कागद कँवल मति मसि

करि निर्मल बिन रसना निस दिन गुण गाऊँ ।।4 ।। कहै रविदास राम जपि भाई संत साखि दे बहुरि न आऊँ ।।5 ।। (अमृतवाणी पन्ना 84)

राग कानडा (दोपाद)

जा कै राम जी धनी ता कै काहि की कमी है। मनसा को नाथ मनोरथ पुरबै सुख निधान की काहा गनी है ।।1 ।। कवन काज किरपन की माया करत फिरत अपनी अपनी है ।। खायी न साकै खरच नहि जावै, ज्यों भुयंग सिर रहत मनी है ।।2 ।। जा की रासि थावर नहि आवै, राहा केतकी मुक्त अनी है ।। रखवारे को चक्र सुदर्शन, विघन न ब्यापै रोक छिनी है ।।3 ।। सिव सनकादिक पार न पावै, मैं बपुरै की कौन गिनी है ।। जा की प्रीत निरंतरि हरि सो, कहै रविदास ताकी सदा बनी है ।।4 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 86)

सतनाम सतनाम सतनाम

* * *

‘बारह मास’

‘‘चेत’’

चढ़या चेत सुलखना, कर संतन संग प्रीत॥ गुर चरनन चित्त लाए कर, राम नाम जप्प नीत॥ गुर गोबिंद जहि गाईए, कर सरवण नित नीत॥ गुर के चरनन प्रेम कर, हिरदे धरो गुर मीत॥ बचन गुर के सुनत ही, मिटत भरम सभ भीत॥ मनमुख संग ना कीजीए, गुरमख संगत याहर॥ मनमुख संगत बिघन है, गुरमुख संगत सार॥ मनमुख संगत डूबणो, गुरमुख संगत पार॥ गुरमुख रिदै प्रगास है, मनमुख अंध गुवार॥ गुर के अमृत वचन सुण, शरधा हिरदे धार॥ रविदास भगती एही है, हिरदे खूब विचार॥ चेत सुहाणां तिनां नूं, जिनां सोहं नाम प्यार॥

‘‘वैसाख’’

वैसाख सुहावा सर्व सुख, गुर के वचन विचार॥ अंतर ध्यान लगाए कर, समझो सार आसार॥ गुरदेव को ग्रहन कर, तज सब झूठ बिकार॥ हिरदे हरि, हरि हरी को, सिमरो वारं वार॥ दुष्टा संग त्याग कर, संतां संग प्यार॥ दृड़ कर राम ध्याऐ तूं, भव निधि उतरे पार॥ हरि, हरि नाम जपंदिया, कदी ना आवे हार॥ भगत बिना गुरदेव

की, होवत नहीं कल्याण ॥ गुरु बिना जन्म विअर्थ ऐह, जावत साची मान ॥ गुर हरि भगत कहंदिया, निहचल मिल है ज्ञान ॥ कहे रविदास लग चरन गुर, मन का हर अभिमान ॥ वैसाख सुहावा तिनां है, हरि, हरि जपे सुजान ॥

''जेठ''

जेठ तपत बहु घाम कर, शांत ना होवत मीत ॥ क्रोध अगनि कर तपत, मन लोभी लोभ परीत ॥ सोहं नाम मुख जपत, जन कीरत करैह नीत ॥ संतां संग निवास कर, शांत भयो तिन चीत ॥ उतपत करे आप सभि, करे पालणा नीत ॥ प्रभू बिन दूजा नांहि को, कर निहचे परतीत ॥ तिस प्रभू को तूं जप सदा, होकर मनो नाचीत ॥ प्रभू सिमरन गुर दया ते, नष्ट होत जम भीत ॥ सतगुर के प्रताप ते, गावहु प्रभू गुण वाद ॥ सो किरपा नेतर रसना नाम का, करण दीए सुण नाद ॥ सुंदर साजिया जाहि प्रभ, राख सदा तिस याद ॥ जो जन भगत बिहीन है, जनम जाए तिस बाद ॥ गुर चरनी लग भगत कर, मिटह पाप अगाद ॥ कीरतन भगती तीसरी, रक्खो इन को याद ॥ जन रविदास गुरू सिमरिया, जो जन सदा

आनाद॥ जेठ तापंदा ना लग्गे, जिन चाखिया नाम सुआद॥

''हाड़''

हाड़ अवध है घाम की, शांत अवध सुख जान॥ लोभ अवध है पाप की, कर भगत मिले हरि धाम॥ गुर के चरन सु कंवल की, करहि सेव सुजान॥ सगल सृष्टि जैसे मलत चरण कंवल भगवान॥ आठ पहिर गुर चरन मल, दृढ़ कर निहचे ध्यान॥ अन्तश करण कर शुद्ध, तब होत पाप की हान॥ पाप नष्ट गुर भगत ते, दर्शन करहो नीत॥ कारण भगत है मुकत का, कर निहचे प्रतीत॥ चरन भगत कर लछमी, शक्ति भई सु मीत॥ जगत चरन की शक्त तिस, भई सु जानो मीत॥ भगति सु गुर के चरन की, कर निहचे धर चीत॥ गुर बिन और ना ध्यान धर, ऐह रविदास की रीत॥ हाड़ शान्त सुख तिन जनां, जिन गुर भगत प्रीत॥

''सावन''

सावण शान्त भई जगत में, बारश होए बशेस॥ घर घर मंगलाचार है, नासे सभी कलेश॥ अन्न धन बहुता

उपजिआ, गऊआं घास हमेश ॥ सुहागणि सदा आनन्द है, दुहागणि मैला भेस ॥ कर पूजन गुर चरन की, शरधा साथ हमेश ॥ पान, सुपारी, पुष्पकर पूजन करो हमेश ॥ अर्चना भगती पंचमी, गुर पूजा में ध्यान॥ बिना इष्ट गुरदेव ते, पूजो देव ना आन ॥ गुरू हरि में ना भेद कुझ, कहयो आप सुजान ॥ निहचे कर गुर चरन भज, होवत है कल्यान ॥ गुर समान नहीं और जग, जानत संत सुजान ॥ कहि रविदास गुर चरन को, करत सदा ही ध्यान ॥

''भादरों'' (भादों)

भादरों भरम भुलाइया, माया संग प्यार ॥ गुर बिन शांत ना पाए है, जनम मरन में बारंबार ॥ जिन्हां विसारिया राम नाम, गुर चरनी नहीं प्यार ॥ धृग तिनां का जीवणा, कांहू आए संसार ॥ भवि जल मांहि भवंदियां, ना उरवार न पार ॥ गुर चरनन का आसरा, जिन मन लीना धार ॥ कर डंडोत गुर चरन में, भवनिध उतरे पार ॥ गुरुदेव गुरु समझ के, करीं शुकर विचार ॥ बन्दना भगती छठी ऐह, करे शिश वडभाग ॥ अवर करम सभ त्याग कर, गुर की चरनी लाग ॥ गुर के चरन बहु प्रेम कर, माया मोह त्याग ॥ बिन गुर भगत न थिर कछू, जगत पसारा बाग ॥

पूरन पुन्न प्रताप ते, जागियो इसो बराग॥ सोएयो मोह की नींद में, गुर किरपा भयो सुजाग॥ रविदास गुरु चरन को, तूं कभी नहीं त्याग॥

''अस्सू''

अस्सू आसां पूरीयां, जब गुर भये दियाल॥ चरनी लावो दास को, करो प्रभू प्रतिपाल॥ प्रेम तार गुरनाम मन, गल पावो माल॥ दर्शन कर गुर चरन को, तब ही भये निहाल॥ गुर चरनी लग भगत कर, त्याग मोह का जाल॥ गुर भगती तब पाईए, जो होवे लिखिया भाग॥ दासा भगती ऐही है, सपतम जानो लाल॥ करो अभी पछताओगे, फिर हाथ ना आवै काल॥ ऐह दासा भगती कीनी विरले वीर॥ सवास, सवास आज्ञा राखियो धीर॥ रहे सदा विच आज्ञा, एहो भगत महान॥ दासा भगती ऐही है, दासन दास बिखान॥ बुध सुध तब होए है, पावै निरमल ज्ञान॥ अस्सू पूरन आस सब, गुरूदेव विखियान॥ रविदास गुरू चरनन का, सदा करत है ध्यान॥

''कतक''

कतक कर्म त्याग कर, भगत करो गुरदेव॥ सोहं सोहं

जपंदिया, कर संतन की सेव॥ मात, तात और भ्रात ते, प्रिय जान गुरदेव॥ और सखा नहि जगत में, जैसे है गुरदेव॥ सखा भगत ऐह अशटमी, कीती अर्जन देव॥ सखा जान गुर भगत कर, त्याग करो अहंमेव॥ काम क्रोध हंकार तज, तब कछू पावै भेव॥ सखा भगत सुभाव यह, जिम जल, दूध मलेव॥ सरब करम को त्याग कर, हरि गुर जप दिन रैन॥ बाझह नीर जिम मीन को, आवत नांही चैन॥ चकवी करे विलाम जिम, कब ऐह जावे रैन॥ चंद चकोर की प्रीत जिम, मोर मुगध घन बैन॥ सवास, सवास नहीं बिसरे, जिऊं बच्छरे को थैन॥ जिम कामणि प्रसंन्न अति, पती को देखत नैन॥ कतक सवेर काम सभ, जब गुर करना ऐन॥ रविदास गुरूदेव चरन को, धोए धोए कर पैन॥

''मघ्घर''

चड़िया मघ्घर हे सखी, गावो प्रभ के गीत॥ संता संगत पाए कर, गुरूदेव सिमरो नीत॥ तन, मन, धन सभ अरप कर, ऐसी करो प्रीत॥ त्याग लोभ मोह अहंकार सभ, गुरूदेव की करो प्रीत॥ गौण वाक सभ त्याग कर, संत वचन धर चीत॥ तन मन धन ऐह हंकार, आपणे कछहु

ना मान ॥ गर्भ करत जो इनसे, सो नर है अनजाण ॥ आप कछहू ना होत है, देणहार हरि धाम ॥ मैं कीया मैं करत हूँ, कूड़ा करहि माण ॥ हरि का दीया सो गुर दीया, तैं की दीया आन ॥ तेरा इक हंकार है, अर्पण तिस को मान ॥ नव प्रकार दी भगत ऐह, सत गुरदेव बिखान ॥ जन रविदास करे भगत जो, शुद्ध भयो तिस मान ॥

"पोह"

मघ्घर पूरा भया जब, तब चड़िया पोह मास ॥ सोहं नाम तूं सिमर नित्त, जग ते होए उदास ॥ अवर कामना सर्ब तज, सतगुर की कर आस ॥ सतगुर शरणी लग्गियां, पाप होत सब नास ॥ सरवण करत गुरां ते, साधन ज्ञान बिलास ॥ वचन धार गुरदेव उर, सभ संसे होवन नास ॥ सतनाम उपदेश गुर, कर तूं दृढ़ अभ्यास ॥ वचन गुरू परकाश कर, होत भरम सभ नास ॥ सरवण इस का नाम है, सुण सतनाम विचार ॥ सत सरूप परमात्मा, मिथिया जगत आसार ॥ तिस प्रभ को तूं सिमर मन, जो है सरब आधार ॥ सतगुर शरनी लग कर, समझो सार आसार ॥ प्रभ बिन अवर ना जाण कछहू, सब इक ब्रहंम पसार ॥ असथावर जंगम आदि सभ, जीया जंत निरधार ॥ जन

रविदास पोह बीतिआ अब सुन माघ विचार॥ जन गुरुदेव हरि भेटिया, भवजल उतरे पार॥

"माघ"

माघ महीना धर्म का, दृढ़ कर तूं सतसंग॥ संतां संग प्रीत कर, कदी ना होवे भंग॥ धूड़ संत के चरन की, सोई श्रेष्ट है गंग॥ पापां की मल उतरे, चढ़े नाम का रंग॥ मनमुख संग ना कीजीए, पडत भजन में भंग॥ दुःख बिनसे सुख लाभ होवे, गुरमुख जिन के संग॥ नाम जपो मिल गुरमुखां, जो है सदा आसंग॥ तूं वी प्रभ ते भिन्न नहीं, जिऊं जल मांहि तारंग॥ सोहं नाम रग रग रचे, नाम का चड़े जब रंग॥ पंचो वैरी त्याग कर, तब होए निसंग॥ गुरु प्रेमी गुर की शरण गहि, करत खूब विचार॥ गुरुदेव के प्रताप बिन, समझे न सार असार॥ करके दृढ़ उपदेश गुर, भवनिधि उतरे पार॥ मन्द भाग बिन सतगुरां, डुबण भव निध धार॥ सतगुर के प्रसादि हम, जानिया आत्म राम॥ जानण जोग सु जानिया, जो आत्म निज धाम॥ मिटिया गुमान गुर दया ते, पाया अब विसराम॥ पुन्ने सगल मनोरथां, रहियो ना बाकी काम॥

अनेक जन्म दुःख पाए कर, आए गुर की साम ॥ जिहड़े विछड़े तिह मिले, भये अभ आत्म राम ॥ सतगुर के भजन बिन, नही अवर कुछ काम ॥ इको सोहं सतनाम जीयो, सिमरो आठो जाम ॥ सरवण कर गुर वचन को, निसचे कर उपदेश ॥ निसवासर अभ्यास कर, तज कर सगल कलेश ॥ बुद्बुदा फेन तरंग का, जल ते भिन्न ना लेस ॥ सब भूखण जिन कनक के, कंचन बिन ना शेष ॥ घटि मिट माटी रूप सब, और ना कछहु विशेष ॥ अनिक भांति पट जो भये, सूतर तिस का वेस ॥ रविदास गुरू चरन के, करहूं सदा आदेश ॥

''फगन''

चड़िया फागण मास जब, फूली सभ गुलजार ॥ धरती सब हरियावली, सुंदर बाग बहार ॥ बुलबुल मसत बहार पर, भंवरा भई गुलजार ॥ निवण फल बहु बाग में, गलगल, आम, आनार ॥ गुरमुख गुर की शरण गहि, करते खूब विचार ॥ सतगुर के परताप कर, समजे सार आसार ॥ कर के दृढ़ उपदेश गुर, भव निध उतरे पार ॥ मंद भाग बिन सतगुरां, डुबण भव निध धार ॥ सतगुर के

प्रसादि हम, जानिया आतम राम॥ जानण योग सो जानिया, जो आत्म निज धाम॥ मिटिया गमन गुर दया ते, पाया अब बिसराम॥ आनेक जनम दुःख पाए कर, आए गुर की शाम॥ जिहड़े विच्छड़े तिह मिलो, भये सो आतम राम॥ जन रविदास गुर भजन बिन, नहीं अवर कछहु काम॥ गुरू चरनों का ध्यान कर, सुण बारां मासक उपदेश॥ पढ़े सुणे जो प्रेम कर, होवे कल्याण हमेश॥ (अमृतवाणी पन्ना 127)

सतनाम सतनाम सतनाम

* * *

विवाह की विधी

सतनाम सतनाम सतनाम

''दोहरा''

धरत अकाश को थापिया, रैन दिवस नित्त पाल॥ सर्व जीव के करम जो, साहिब करे ख्याल॥ आप अपना सभ पावते, किरत धुर परवान॥ पवन पानी सवंतर के, रखशक भये भगवान॥ रविदास कहे भज नाम को, निरभै पावै वास॥ तेरा फल तुझ को मिले, होवे बंद खलास॥

''सांद बाणी''

सोहं सांद सोलखिआ, सरब घटि। मिल गुर नाम लगाइयो रट्ट॥ चौंक चतर जग जाण महान। पूरन हार जगत सो प्राण॥ नानके, मापे, साक सोहेले। कर किरपा सतगुर प्रभ मेले॥ हाथ गाना, गणियो सो माल। किया पुन्न दान रचन आकाल॥ कुंभ कमाल जनम, जन पाइयो। सुरत शब्द आनाज मिलाइयो॥ भर जल, कुंभ कारज में धरियो। तिव कारज सोपूरण करियो॥ दीपक दिल, हंग तेल बिठाई। सुरत मिला, उत्ते जोत जगाई॥ गुर भरवासे, सो संधूर। नौं दर तों, नौं ग्रहि सभ दूर॥ गुरमुख सांद, समझ सच सोई। सभ कारज, प्रभ ओट लै होई॥ खोपा कारज, समगरी घिओ। इक दर खतम सोगंदी भयो॥ अब अंब, पत जगन जग जाग। सुरत शब्द मिल मंगल राग॥ सब मिल प्रण, प्राण बिठाओ। संग गुर सति विशवास जमाओ॥ कहे रविदास भज हरि नाम। प्रभ सो ध्यान, सफल सब काम॥

''अनमोल वचन''

मिलनी के समय

मेल मिलाइया दाते, मिलिया मिलणे के योग॥ दिल जे

मिलावे दाता, जांदे विछोड़े वाले रोग ॥ खुशीयां सतगुर बख्शे, उमरां दे जांदे ने वियोग ॥ तन, मन वारिया जावे, मिलणी आदर संग होग ॥ किरपा पग मसतक राखो, सतगुर सरब सिर योग ॥ प्रभ तों मिल के मांगो, पवे ना विछोड़े वाला भोग ॥ कहि रविदास पुकारै, जनमां दे जांदे सारे सोग ॥

''शादी उपदेश''

॥ एक ओं सोहं सतनाम जीओ ॥

॥ दवैइया छंद ॥

''पहिलड़ी लांव''

पहिलड़ी लांव हरि दर्शन गुरां दा, जावे दूर बुलाई ॥
दीआ मेल हरि दया धार के, गुज्झी रंमझ चलाई ॥
अनहद शब्द सुणे मन थिर कर, मिट गए सरब अंधेसे ॥
किरपा सिंध गुर मिलिया पूरा, लिव लागी हरि भेसे ॥
पूरे गुर ते शब्द सच्च पाएआ, रतन अमोलक मीता ॥
सुणदिआं ही मन मसत दीवाना, शब्द गुरां ने कीता ॥
महांवाक सुण, सुण के गुरू दे, शरधा प्रीत मन आवै ॥
कहि रविदास ऐह है लांव पहिलड़ी, चौंसठ्ठ तीरथ नहावै ॥

''दूजड़ी लांव''

दूजड़ी लांव प्रेम परीती, सुरत शब्द मिलाई॥
सतगुर कीती परम परीती, दरगह में सुख पाई॥
सरब मनोरथ तिस दर ते पाउ, शरण परै को तारै॥
हुकम अन्दर है चार पदार्थ, तन, मन जेकर वारे॥
सतगुर शरण रहि वडभागी, सहिंसे सगल गुआऐ॥
सतगुर दाता प्रभ संग राता, निस दिन हरि लिव लाए॥
भरम भुलावा मिटिया दावा, चाल गुरां दी चाली॥
कहि रविदास ऐह लांव दूजड़ी, बचन गुरां दे पाली॥

''तीजड़ी लांव''

तीजड़ी लांव अवरन दोष ते, रहित भया मन मेरा॥
हरि घटि दे विच ऐक समाना, सो घर पाया डेरा॥
परम प्रभू परमेश्वर जाना, तां सुख मिले उपारै॥
मन में सच मंगल सुख होए, जो लोचा मन धारै॥
मंगल दे मंगल नित गावां, ऐहो अमृत धारा॥
हरि, हरि संग लिव जुड़ी जुड़ंदी, साचा ऐह सहारा॥
सुंदर शब्द आमोलक दर्शन, जो सतगुर दर आवै॥
कहि रविदास सो लांव तीसरी, सुरत गगन चड़ जावे॥

''चौथड़ी लांव''

चौथड़ी लांव रतन हरि जाना, सुख संपति घर आऐ ॥
आसा, मनसा सतगुर पूरे, जै, जै शब्द अलायि ॥
धीरे, धीरे गई पहुँच हुण, हो सतगुर दी दासी ॥
ना आवे, ना जावे कित वल, मिलिआ पुरख अविनाशी ॥
सति संतोख भया मन मेरे, सतगुर वचन सुनावै ॥
आया बेराग, मिलिया अविनाशी, जोड़ी जूड़ी सुहावै ॥
मन मंदर मांहै चों उपजिया, प्रीत प्रभू संग लाई ॥
कहि रविदास सति लांव चौथड़ी, पुरखे पुरख मिलाई ॥

''सुहाग उसतत''

॥ एक ओं सोहं सतनाम जीओ ॥

सुरत सुहागण गुरूदेव प्यारी, सोहं नाम संग खेली ॥
बहुत जनम दे विच्छड़िआं नूं, आण गुरां ने मेली ॥
झूठी खेड बिसर गई तन ते, बाजीगर सिऊं मेली ॥
सच्चा पुरख मिलाया परमेश्वर, तिस संग लाड लडेली ॥
आप समान आपणे कीती, आज्ञान नींद ते जागी ॥
भुली चुकी रसते पै गई, आतम सिऊं लिव लागी ॥
सरब विआपी सतगुर मेरा, सब दा करे सुधार ॥

कहे रविदास मन भया दीवाना, मिलिया अमृत धार॥

* * *

॥ मंगलाचार॥

''मंगलाचार पहला''

हरि, हरि नाम धियाओ, सदा मन प्रेम कर॥ लोभ, मोह, हंकार, दूत, जंम दूर हरि॥ सच, शील, संतोख, सदा दृढ़ कीजीए॥ अमृत हरि का नाम, प्रेम कर पीजीए॥ संतां संग निवास, सदा चित्त लोड़ीए॥ मनमुख दुष्टा संगत, तों मन मोड़ीए॥ मनमुख चित्त कठोर, पत्थर सम जानीए॥ भीजत नाहन कभी, रहे विच पानीए॥ तजि कठोर का संग, सदा गुर शरण गहु॥ गुर चरनन में ध्यान, सदा मुख राम कहु॥ निज पती साथ प्रीत, सदा मन कीजीए॥ तन, मन अरपे तांह, सदा सुख लीजीए॥ निज पती साथ प्रीत, साई सोहागणी॥ पती बिन आन ना हेरे, सा बडिभागणी॥ जिन धन पती परमेश्वर, जानयो, है सही॥ सदा सुहागण नार, पाए दुःख ना कही॥ कहि रविदास पुकारे, जपयो नाम दोए॥ हरि कारज सो एक, सदा सुख माणो दोए॥

''मंगलाचार दूसरा''

दूजा भाओ मिटाओ, मंगल दूसरा ॥ बण, तृण परबत, पूर रहयो, प्रभ हूंसरा ॥ घटि, घटि ऐको, अलख, पसारा पसरिया ॥ गुरमुख जाने ज्ञान, ना जाने असरिया ॥ सभ घटि पूरण ब्रहम, जान गुर पाएके ॥ रहे सदा आनन्द, तास गुण गाए के ॥ जो हरि ते बे-मुख, सदा दुःख पायि है ॥ मानस जनम आमोल, बिअरथ गुआयि है ॥ गुर बिन लहे ना धीर, पीर बहु पायि है ॥ लहे अनादर सरब, ठऊर जहा जायि है ॥ जब गुर भये दियाल, सो चरनी लाया ॥ सतगुर काटे बंधन, नाम जपाया ॥ साध संग प्रताप, सदा सुख पाइए ॥ संतन के प्रताप, नाम हरि ध्याइये ॥ संतन के प्रताप, पती प्रभ पाइए ॥ मिलिया अटल सुहाग, वियोग गवाइए ॥ संगत तों आशीर्वाद, इस जोड़ीए ॥ कहि रविदास इन संग, सदा सुख लोड़ीए ॥

''मंगलाचार तीसरा''

रलि मिल सखीयां, मंगल गाया तीसरा ॥ सदा जपो हरि नाम, ना कबहू बीसरा ॥ सतगुर के लग चरन, सदा हरि गाइऐ ॥ रिद्ध सिद्ध नौं निद्ध, सभी कछहू पाईए ॥ सतगुर

के प्रसाद, अटल सुहाग है॥ सतगुर भये दिआल, तां जागियो भाग है॥ सतगुर दर्शन पायि, मिटे अघ सरब ही॥ पाइयो शील निधान, मिटाए गरब ही॥ रहिया ना संसा मूल, जिन्ही गुर पाया॥ हिरदे भया प्रकाश, अज्ञान मिटाया॥ बिन हरि नाम ना सार, कछहू संसार है॥ हरि का नाम ध्यावै, भवि निद्धि पार है॥ मंगल महां सो मंगल, हरि हरि नाम है॥ आठ पहिर मुख जपो, ऐही शुभ काम है॥ सच रविदास बतावे, नाम ना छोडीए॥ गुर चरनन में ध्यान, सदा मन जोड़ीए॥

''मंगलाचार चौथा''

मंगलचार आनन्द, सुखी मुख गाया॥ कारज भया सुहेला, हरि हरि ध्याया॥ धन और पिर की, प्रीत बणी इक सार है॥ घटा, छटा सम मिली, मीन जिम वार है॥ पिर संग पाए आनन्द, ना दुःख की लेस है॥ पती की आज्ञा में, जो रहे हमेश है॥ पती परमेश्वर करके, जिन धन जाणिया॥ सदा सुखी बहु नार, सरब सुख माणिया॥ जिन पर सतगुर दयाल, सुखी बहु गाइए॥ महिमा अपर अपार, ना कीमत पाइए॥ सतगुर के संग, तेरे अवर वी केतड़े॥ कर के दृढ़ प्रीत, प्रेम करो जेतड़े॥

कारज सब ही पूरे, सतगुर कर दीए ॥ पूरब पुन्न अनेक फल तिस अब लीए ॥ जन रविदास प्यास, सदा गुर नाम की ॥ हरि संग रहे प्रीत, ओट इक नाम की ॥

''अनमोल वचन''

प्रणवंते प्रण घड़ी, सोहाई जीओ ॥ प्रभ कृपा ते आण, मिलाई जीओ ॥ प्रण प्रणवंते प्रण, धारन की जीओ ॥ प्रण में एक नाम, सो ली जीओ ॥ पती घर पतनी, एक रसायण जीओ ॥ मात बड़ी, छोटी सम, भैण जीओ ॥ पती परमेश्वर, सम नहीं देव जीओ ॥ पूजन, सेवन सम, नहीं मेव जीओ ॥ पवन अगन, जल, जन हमराई जीओ ॥ सूरज, धरत, संगत, चंन अगवाई जीओ ॥ बहुत जनम विछड़त, वियोग जीओ ॥ सुरत शब्द वियोग, संजोग जीओ ॥ प्रण करते, प्रण तोड़, निभाओ जीओ ॥ लोक कुसंग फरक, नहीं पाओ जीओ ॥ जन रविदास निभउ संग, सोई जीओ ॥ गुर किरपा ते, प्राप्त होए जीओ ॥

(अमृतवाणी पन्ना 139)

सतनाम सतनाम सतनाम

* * *

वैरागमई अमृतवाणी

सतनाम सतनाम सतनाम

रागु गउड़ी

पहिले पहरे रैणि दे बणिजारिया तैं जनम लिया संसार वे। सेवा चूको राम की बणिजारिया तेरी बालक बुद्धि गंवार वे ॥1 ॥ बालक बुद्धि गंबार न चेतियो भूला माया जाल वे। कहा होय पाछे पछिताये जल पहिले न बांधी पाल वे ॥2 ॥ बीस बरस का भया अयाना थामि न सका भाव वे। जन रविदास कहै बणिजारिया जनम लिया संसार वे ॥3 ॥ दूजे पहरै रैण दे बणिजारिया तूँ निरखत चालियो छांह वे। हरि न दमोदर ध्याइया बणिजारिया तैं लेयी न सका नांव वे ॥4 ॥ नांव न लीया औगुन कीया इस जोबन कै तान वे। अपनी परायी गिनी न कायी मंद करम कमान वे ॥5 ॥ साहिब लेखा लेसी तूँ भरि देसी भीर परै तुझ तांह वे। जन रविदास कहै बणिजारिया तूँ निरखत चाला छांह वे ॥6 ॥ तीजै पहरे रैण दे बणिजारिया तेरे ढिलड़े पड़े प्रान वे। काया रवानी ना करै बणिजारिया, घट भीतर बसे कुजान वे ॥7 ॥ एक बसै कुजान कायागढ़ भीतर

पहिला जनम गंवायि वे। अब की बेर न सुकिरित कीयो बहुरि न यहि गडि पायि वे ।।8।। कंपी देह कायागढ़ छीना फिर लागा पछितान वे। जन रविदास कहै बणिजारिया तेरे ढिलड़े पड़े परान वे ।।9।। चौथे पहरे रैन दे बणिजारिया तेरी कंपन लागी देह वे। साहिब लेखा मांगिया बणिजारिया तू छाड़ि पुरानी थेह वे।।10।। छाड़ि पुरानी जिंद अयाना बालदि लदि सबेरिया वे। जम के आये बांधि चलाये बारी पूगी तेरिया वे।।11।। पंथ चले अकेला होय दुहेला किस को देह सनेह वे। जन रविदास कहै बणिजारिया तेरी कंपन लागी देह वे ।।12।।

(अमृतवाणी पन्ना 6)

गउड़ी बैरागणि

घट अवघट डूगर घणा इक निरगुणु बैलु हमार।। रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि।।1।। को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे।।1।। रहाउ।। हउ बनजारो राम को सहज करउ व्यापारु।। मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि।।2।। उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु।। मोहि जम डंडु न

लागई तजीले सरब जंजाल ॥3 ॥ जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु ॥ मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥4 ॥1 ॥ (अमृतवाणी पन्ना 8)

राग आसा

माटी को पुतरा कैसे नचतु है॥ देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥1 ॥ रहाउ ॥ जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥ माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥1 ॥ मन बच क्रम रस कसहि लुभाना॥ बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥2 ॥ कहि रविदास बाजी जगु भाई॥ बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥3 ॥6 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 13)

राग सोरठि

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ॥ हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥1 ॥ प्रानी किआ मेरा किआ तेरा॥ जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥1 ॥ रहाउ॥ राखहु कंध उसारहु नीवां ॥ साढे तीन हाथ तेरी सीवां ॥2 ॥ बंके बाल पाग सिर डेरी॥ इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥3 ॥ ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥ राम नाम बिनु बाजी हारी ॥4 ॥ मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा

जनमु हमारा॥ तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा॥5॥6॥ (अमृतवाणी पन्ना 18)

रे मन! चेत मीचु दिन आया, तो जग जाल न भया पराया।। टेक।। कानि सुनै न नजरि दीसै, जीह थिरु न रहाई। मुण्ड रु तन थर थर कांपे, अंतहु बिरियां पहुंतौ आई।।1।। केसौ सेतह पिकु भये सभु, तन मनु बल बिलमाया। मध्यांन गयौ तुरा चलि आई, अजहुं जग रह्यौ भरमाया।।2।। पानी गयो पलु छीजै काया, यहि तन जरा जराना। पांचौ थाके जरा जरु सानै, तौ रामहि मरमु न जाना।।3।। हंस पंखेरू चंचलु भाई, समुझि पेखि मन मांहि। प्रति पलु मीचु गरासै देही, फुनि रविदास चेतहु नांहि।।4।। (अमृतवाणी पन्ना 19)

राग सूही

जो दिन आवहि सो दिन जाही॥ करना कूचु रहनु थिरु नाही॥ संगु चलत है हम भी चलना॥ दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना॥1॥ किआ तू सोइआ जागु इआना॥ तै जीवनु जगि सचु करि जाना॥1॥ रहाउ॥ जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै॥ सभ घट भीतरि हाटु चलावै॥ करि बंदिगी

छाडि मै मेरा ।। हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ।।2 ।। जनमु सिरानो पंथु न सवारा ।। सांझ परी दह दिस अंधिआरा ।। कहि रविदास निदानि दिवाने ।। चेतसि नाही दुनीआ फनखाने ।।3 ।।2 ।। (अमृतवाणी पन्ना 27)

ऊचे मंदर साल रसोई ।। एक घरी फुनि रहनु न होई ।।1 ।। इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ।। जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ।।1 ।। रहाउ ।। भाई बंध कुटंब सहेरा ।। ओइ भी लागे काढु सवेरा ।।2 ।। घर की नारि उरहि तन लागी ।। उह तउ भूतु भूतु करि भागी ।।3 ।। कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ।। हम तउ एक राम कहि छूटिआ ।।4 ।।3 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 28)

राग सूही चौपदा

दुखियारी दुखियारा जग महिं , मन जप लै राम पियारा रे ।। टेक ।। गढ़ कांचा तस्कर तिह लागा , तूँ काहे न जाग अभागा रे ।। नैन उघारि न पेखियो तूने , मानुष जनम किह लेखा रे।। पाऊं पसार किमि सोय परयो, तैं जनम अकारथ खोया रे। जन रविदास राम नित भेंटहि, रहि संजम जागित पहरा रे ।।1 ।। (अमृतवाणी पन्ना 28)

राग मारू (चौपदे)

मन मोरा माया महि लपटानो।। टेक।। बिसासक्त रहियो निसवासर, अजहूँ नहिं अघानो। कामी कुटिल लबार कुचाली, समझयि नहीं समुझानो।।1।। सतिसंगत पलु नहीं कीन्ही, मन मूरखि बहु गरवानो। सोत खात दिन रैन बितायि, ताहि मैं रसना सुख मानो।।2।। माया मंहि हिल मिलि रहियो, फोकट साटे जनम गंवानो। कहि रविदास कछु चेत बाबरे, राम नाम विन नहि उबरानो।।3।।   (अमृतवाणी पन्ना 59)

बीति आयु भजनु नहीं कीन्हा॥ टेक॥ सेत भयो तन थर थर कंपहि, हरि सिमरनु नहीं कीन्हा। सत संगति नहिं गुर पद सेऊ प्रभ कीरति नहिं गाई॥1॥ नहि मनु रमयो प्रभ चरनन महिं, तन सिऊं पीरीत द्रिडाई। कहि रविदास चलन की बरिया, कोउ न होय सहाई॥2॥

(अमृतवाणी पन्ना 59)

राग बिलावलु

का तूँ सोवै जागि दिवाना। झूठा जीवन सांचि करि जाना।टेक॥ जो दिन आवै सो दुख मे जाही। कीजै

कूच रहियो सच नाही ॥ संगि चलियो है हम भी चलना। दूर गवन सिर ऊपर मरना ॥1 ॥ जो कछु बोया लुनिये सोई। ता में फेर फार नहीं होई ॥ छाड़िय कूर भजो हरि चरना। ता को मिटै जनम अरु मरना ॥2 ॥ जिनि जीऊ दिया सो रिजक अमड़ावै। घट-घट भीतर रहट चलावै ॥ करि बंदगी छाड़ि मैं मेरा। हिरदै करीम संभरि सबेरा ॥3 ॥ आगे पंथ खरा है झीना। खाँडै धार जैसा है पैना ॥ जिस ऊपर मारग है तेरा। पंथी पंथ संवार सवेरा ॥4 ॥ क्या तैं खरचा क्या तैं खाया। चल दरहाल दिवान बुलाया ॥ साहिब तो पै लेखा लेसी। भीरि परिया तूँ भरि भरि देसी ॥5 ॥ जनम सिराना किया पसारा संवारा। सांझ परी चहुँ दिसि अंधियारा ॥ कहि रविदास निदानि दिवाना। अजहुँ न चेतै दुनी फंदखाना ॥6 ॥

(अमृतवाणी पन्ना 30)

खोजत किथूं फिरै तेरे घट महि सिरजनहार ॥टेक ॥ कस्तूरी मृग पास है रे, ढूंढ़त घास फिरै। पाछै लागो काल पारधी छिन महिं प्रान हरै ॥1 ॥ इड़ा पिंगला सुखमना नाड़ी, जा मैं चित न धरै। सहसतार महिं भंवर गुफा है,

भंवरा गूंज करै ।।2 ।। दिल दरियाव हीरा लाल है गुरमुख समझ पैरै। मरजी वा की सैन विचारै तउ हीरा हाथ पैरै ।।3 ।। कहि रविदास समुझि रे सन्तो, एहु पद है निरवान। एहु रहसि कोउ खोजै बूझे, सोउ है सन्त सुजान ।।4 ।। (अमृतवाणी पन्ना 35)

राग बसंत

तुझहि सुझंता कछू नाहि ।। पहिरावा देखे ऊभि जाहि ।। गरबवती का नाही ठाउ।। तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ।।1 ।। तू कांइ गरबहि बावली ।। जैसे भादउ खूंबराजु तू तिस ते खरी उतावली ।।1 ।। रहाउ।। जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु ।। तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु ।। अप तन का जो करे बीचारु ।। तिसु नही जमकंकुरु करे खुआरु ।।2 ।। पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ।। ठाकुरु लेखा मगनहारु ।। फेड़े का दुखु सहै जीउ।। पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ।।3 ।। साधू की जउ लेहि ओट ।। तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ।। कहि रविदास जो जपै नामु ।। तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ।।4 ।।6 ।। (अमृतवाणी पन्ना 66)

राग मलार

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ।। साधसंगति

पाई परम गते ।। रहाउ ।। मैले कपरे कहा लउ धोवउ ।। आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ।।1 ।। जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ।। झूठे बनजि उठि ही गई हाटिओ ।।2 ।। कहु रविदास भइओ जब लेखो ।। जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ।।3 ।।1 ।।3 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 68)

राग आसावरी

रे मन मांछला संसार समुंदे, तूँ चित्र बिचित्र बिचार रे। जिहिं गाले गलियाहीं मरीये, सो संग दूरि निवारि रे।। टेक।। यम है डिगणि डोरि है कंकण, पर तिय गालौ जाणि रे। ह्वै रस लुबुध रमे यौं मूरख, मन पछितावे नियांणि रे।।1 ।। पाप गुनियो छै धरम निबौली, तूँ देखि देखि फल चाखि रे। परतिरिया संग भलौ जौं होवै, तो राणौ रावन देखि रे।।2।। कहै रविदास रतन फल कारनि, गोबिंद कै गुन गाइ रे। कांचौ कुंभ भरियो जल जैसे, दिन दिन घटतौ जाइ रे।।3 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 77)

सतनाम सतनाम सतनाम

***

आरती 1

राग धनासरी

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे॥ हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे॥1॥ रहाउ॥ नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे॥ नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे॥1॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती॥ नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे॥ नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे॥2॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे॥ तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे॥3॥ दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे॥ कहै रविदास नामु तेरो आरती सतिनामु है हरि भोग तुहारे॥4॥3॥

(अमृतवाणी पन्ना 21)

आरती 2

आरती कहाँ लैं कर जोवै। सेवक दास अचंभो होवै॥ टेक॥ बावन कंचन दीप धरावै। जड़ बैराग रे दृस्टि न आवै॥1॥ कोटि भानु जा की सोभा रोमै। कहा आरती

अगनी होमै ।।2 ।। पाँच तत यह तिरगुनी माया। जो देखै सो सकल उपाया ।।3 ।। कहै रविदास देखा हम माहीं। सकल जोति रोम सम नाहीं ।।4 ।।

(अमृतवाणी पन्ना 88)

आरती 3

संत उतारै आरती देव सिरोमनीये।। उर अंतर तहाँ पैसि बिन रसना भणिये।। टेक।। मनसा मंदिर माहिं धूप धुपइये।। प्रेम प्रीति की माल राम चढ़इये ।।1 ।। चहु दिसि दिबला बालि जगमग ह्वै रहियो रे।। जोति जोति सम जोति जोति मिल रहियो रे ।।2 ।। तन मन आतम बारि सदा हरि गाइये।। भनत जन रविदास तुम सरना आइये ।।3 ।। (अमृतवाणी पन्ना 89)

आरती 4

गगन मंडल में आरती कीजै, नाद बिंद इके मेक करीजै। सुसमन इंदु अमृत कुंभ धरावै, मनसा माला फूल चढ़ावै ।।1 ।। घीव अखंडा सोहै बाती, त्रिकुटी जोत जलै दिन राती। पवन साधना थाल सजीजै,तामें

चौमुख मन धरि लीजै ।।2 ।। रवि ससि हाथ गहौं तिंह माहीं, खिन दहिने खिन बामैं लाहीं। सहस कंवल सिघासन राजै, अनहद झांजन नित ही बाजै ।।3 ।। इंह बिध आरती सांची सेवा, परम पुरिख अलख अभेवा। कहै रविदास गुरदेव बतावै, ऐसी आरती पार लंघावै ।।4 ।। (अमृतवाणी पन्ना 89)

आरती 5

आरती करत हरषै मन मेरो, आवत चित तुव रुप घनेरो ।।टेक ।। अजर अमर अडोल अभेस, निरगुन रहित रुप नहिं रेखा। चेतन सत चित घन आनन्दा, निरविकार तेज अमित अभेदा ।।1 ।। अनुभ अजन्मा सरबग्य अनन्ता, अभेद अदैश अबिगत सुछंदा। नाम की बाती घीव अखंडा, इक ही जोत जलै ब्रहमंडा ।।2 ।। अनत बार तोहि धियान लगावा, मुनि जनि पै पार नहिं पावा। मन बच क्रम रविदास धियावा, घंटा झालर मनहि बजावा ।।3 ।। (अमृतवाणी पन्ना 90)

* * *

अरदास

॥ श्लोक ॥

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥
ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥1 ॥
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥1 ॥रहाउ ॥
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥2 ॥
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥
रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥3 ॥

जपो जी सतिनाम

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥1 ॥ रहाउ ॥
हरि के नाम कबीर उजागर ॥
जनम जनम के काटे कागर ॥1 ॥
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥
तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥2 ॥
जन रविदास राम रंगि राता ॥
इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥3 ॥5 ॥

जपो जी सतिनाम

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥
चारि पदारथ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥1 ॥
हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥
अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥1 ॥ रहाउ ॥
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥2 ॥
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥3 ॥4 ॥

जपो जी सतिनाम

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥1 ॥ रहाउ ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥1 ॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥2 ॥1 ॥

जपो जी सतिनाम

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥1 ॥
तु जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥1 ॥ रहाउ ॥
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥2 ॥
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥3 ॥1 ॥

जपो जी सतिनाम

धन्य धन्य जगतगुरु रविदास जी महाराज, धन्य धन्य महार्षि भगवान वालमीक जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु नामदेव जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु कबीर जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु सैन जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु सधना जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु त्रलोचन जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु बाबा फरीद जी महाराज, धन्य धन्य बाबा श्री चन्द जी महाराज, धन्य धन्य सन्त मीरा बाई जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु रंका जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु बंका जी महाराज, धन्य धन्य संत भील्णी जी महाराज, सारे संत-महांपुरुषों के चरणकमलों का और सेवा सिमरण की कमाई का ध्यान धर के

जपो जी सतिनाम

जगत्गुरु रविदास महाराज जी के जन्म अस्थान सीर गोवर्धनपुर वाराणसी, बेग़मपुरा हरिद्वार, डेरा सच्चखण्ड बल्लां सभी धर्म अस्थानों का ध्यान धर के जपो जी सतिनाम

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥

बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥1 ॥

हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥

कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥

कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥2 ॥1 ॥

धन्य धन्य जगत्गुरु रविदास जी महाराज

आप जी के चरण कमलों में अरदास बेनती है जी...

आप जी की रसना के लिए प्रसाद हाज़िर है जी

कहै रविदासु नामु तेरो आरती, सतिनाम है हरि भोग तुहारे ।।

आप जी के नाम का भोग लगे जी प्रसाद साध संगत में वरते जी

जगत्गुरु रविदास जी महाराज आप जी के नाम की चड़दी होए कला तेरे भाणे सरबत दा भला ।।

30 जनवरी 2010 को श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान मंदिर सीर गोवर्धनपुर वाराणसी में जगतगुरू रविदास महाराज जी, सतिगुरू सरवण दास जी और संत समाज की कृपा से 'रविदासीया धर्म' का ऐलान करते हुऐ श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी

Ravidassia Dharam Parchar Asthan

Village Kahanpur, P.O. Raipur Rasulpur,
Distt. Jalandhar-144012 (Punjab)

ravidassiadharam@gmail.com

www.ravidassiadharam.org

ravidassia dharam parchar asthan

Ravidassia Dharam Parchar Astham, Kahanpur Jalandhar